

दावा

सम्पादक - दीपक कुमार बुद्धदेव

वर्मा कृषि सेवा केंद्र
कृषि संबंधित सभी प्रकार की
दवाइयां, ड्रीप खाद, उन्नत किरमों के
बीज एवं वैटरी स्प्रेयर के विक्रेता
मौ. 700634780
9832896964
पुरला गंज चौक लखोली रोड
आई.सी.आई.टी. आई. बैंक के सामने रा.ज.

शक्ति भू-जल विशेषज्ञ
जमीन के नीचे
आधुनिक जमीनी मशीन द्वारा भू-गर्भ
जल स्रोत खोज विशेषज्ञ (मिलने 5 वर्षों में)
100%
कार्य पूर्ण
गारंटी
मौ. चौक सार्व (सुर्य) - 9787256455, 9407608684
का. - नई बँक, का. बँक में कर्न, कोरा रा, लखनवा (B.P.)

आमसभा
01 मई 2024, बुधवार
प्रातः 10:00 बजे
मेला मैदान, कटघोरा (कोरवा लोकसभा)
आय सादर आमंत्रित है...

नारायणपुर में नक्सलियों के खिलाफ जवानों का बड़ा एक्शन, मुठभेड़ में तीन महिला सहित 10 नक्सली डेर

नारायणपुर। नारायणपुर जिले के अंबुझमाड़ में नक्सलियों को बड़ी मुठभेड़ हुई है। जानकारी के अनुसार डीआरजी और एसटीएफ की संयुक्त टीम और नक्सलियों के बीच हुई मुठभेड़ में एक बार फिर नक्सलियों को बड़ा नुकसान पहुंचा है। जानकारी के अनुसार इस मुठभेड़ में तीन महिला सहित 10 नक्सली मारे गए हैं। मुठभेड़ के बाद जवानों ने सर्च के दौरान एक एफ-47 सहित भारी मात्रा में हथियार एवं गोला बारूद एवं दैनिक उपयोग की सामग्री बरामद की है।



पुनर्वास नीति के तहत समाज की मुख्य धारा में वापस लौटे नक्सली- गृह मंत्री

नारायणपुर नक्सली मुठभेड़ की जानकारी देते हुए गृह मंत्री विजय शर्मा ने कहा, कल रात से सर्चिंग ऑपरेशन शुरू किया गया था। इस सर्चिंग ऑपरेशन में जवानों ने छह महिला नक्सली और छह पुरुष नक्सलियों को मार गिराया। इस मुठभेड़ में कोई भी जवान हताहत नहीं हुआ। इस सफलता के लिए डीआरजी और एसटीएफ के जवान बधाई के पात्र हैं।

इस दौरान गृह मंत्री विजय शर्मा ने एक बार फिर नक्सलियों से बातचीत की पेशकश की। उन्होंने कहा, विष्णुदेव सरकार नक्सलियों और भटक चुके लोगों से बातचीत के जरिए इस मसले का हल चाहती है। सरकार की पुनर्वास नीति के तहत नक्सली समाज की मुख्य धारा में वापस लौटे। सरकार चाहती है बस्तर में शांति हो और गांव तक विकास पहुंचे। जानकारी के अनुसार यह मुठभेड़ छत्तीसगढ़ महाराष्ट्र सीमा के पास अंबुझमाड़ के टेकेमेटा इलाके में हुई है। अंबुझमाड़ के टेकेमेटा इलाके में बड़ी संख्या में नक्सलियों की मौजूदगी पर डीआरजी और एसटीएफ की संयुक्त टीम अंबुझमाड़ के जंगल में अभियान चलाया। जवानों ने नक्सलियों को कई जगहों पर घेरकर फायरिंग की। इस मुठभेड़ में नौ नक्सली डेर हो गए। मारे गए नक्सलियों में तीन महिला और छह

भारी मात्रा में हथियार एवं गोला बारूद बरामद

मुठभेड़ पश्चात घटनास्थल की सर्चिंग के दौरान जवानों ने अब तक तीन महिला नक्सली सहित कुल नौ नक्सलियों के शव बरामद किये हैं, जिसकी शिनाख्ती की जा रही है। सर्च के दौरान नक्सलियों के इलाके से पुलिस ने एक एफ-47 सहित भारी मात्रा में हथियार एवं गोला बारूद एवं दैनिक उपयोग की सामग्री जब्त की है।

नारायणपुर मुठभेड़ में बड़े सकुत्ती है नक्सलियों के मारे जाने की संख्या

खबरों के अनुसार मुठभेड़ में नक्सलियों के मारे जाने की संख्या बढ़ सकती है। बता दें कि कांकेर के छोटे बेटिया में भी जवानों ने नक्सलियों के खिलाफ बड़ी कार्रवाई की थी। कांकेर के छोटे बेटिया में हुए मुठभेड़ में 29 नक्सली मारे गए थे। इससे पहले सुकमा जिले के थाना किस्टाराम क्षेत्र अंतर्गत पेलेपाड व आसपास (शेष पृष्ठ 6 पर...)

इयूटी जॉइन कर सकते हैं जीपी सिंह; C AT ने बहाली के दिये निर्देश, राजद्रोह मामले में हुए थे बर्खास्त

रायपुर। बर्खास्त पूर्व आईपीएस जीपी सिंह को सेंट्रल एडमिनिस्ट्रेटिव टिब्यूनल से बड़ी राहत मिली है। इस राहत के बाद प्रशासनिक गलियारे में इस बात की चर्चा है कि जीपी सिंह फिर से इयूटी जॉइन कर सकते हैं।



कैट ने चार हफ्तों के भीतर जीपी सिंह से जुड़े मामलों के निराकरण कर बहाल किए जाने का आदेश जारी किया है। वर्ष 1994 बैच के आईपीएस जीपी सिंह को राज्य सरकार की अनुशंसा पर केंद्रीय गृह मंत्रालय ने पिछले साल जुलाई के महीने में अनिर्वाय सेवानिवृत्ति दे दी थी।

अधिक के सम्पत्ति का ब्यौरा मिला था। इसके साथ ही सरकार गिरने की साजिश पर राजद्रोह का मुकदमा दर्ज किया गया था। आरोपों की जांच के लिए तीन सदस्यीय समिति बनायी थी। साल 2022 में मिली थी जमानत

एटी करप्शन ब्यूरो ने जुलाई 2021 में जीपी सिंह के रायपुर स्थित पुलिस लाइन के सरकारी बंगले, राजनांदगांव और ओडिशा के 15 जगहों पर छापेमारी की थी, जिसमें 10 करोड़ रुपए की अशोषित संपत्ति के साथ ही कई स्वदेनशील कागजात भी मिले थे। एक डायरी भी मिली थी। जिसे लेकर सियासी गलियारे में काफी बवाल मचा था।

इसके बाद एटी करप्शन ब्यूरो ने सिंह के खिलाफ भ्रष्टाचार के मामले में एफआईआर दर्ज किया था। मामले में 9 जुलाई 2021 को जीपी सिंह ने हार्डकोर्ट में एक याचिका लगाई थी। इसमें सीबीआई जांच की मांग की थी। 11 जनवरी 2022 को जीपी सिंह को नोएडा से गिरफ्तार किया गया था। इसके बाद उन्हें साल 2022 में जमानत मिल गई थी।

राज्य की पिछली भूपेश सरकार ने 5 जुलाई 2023 को उन्हें सस्पेंड कर 8 जुलाई को उनके खिलाफ राजद्रोह का केस दर्ज किया था। राज्य सरकार की सिफारिश पर 10 महीने बाद केंद्रीय गृह मंत्रालय ने सिंह को बर्खास्त कर दिया था। केंद्रीय गृह मंत्रालय ने सर्विस रिव्यू कमिटी की सिफारिश पर 21 जुलाई 2023 को आईपीएस जीपी सिंह को फोर्सली रिटायर कर दिया था। उस समय जीपी सिंह की सेवा के 8 साल शेष बचे थे। आय से अधिक सम्पत्ति मामले में जीपी सिंह के खिलाफ 10 करोड़ से

चुनाव से पहले ही केजरीवाल को गिरफ्तार क्यों किया? सुप्रीम कोर्ट ने मांगा ईडी से जवाब



नई दिल्ली। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की याचिका पर लगातार दूसरे दिन सुनवाई हुई। सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार को केजरीवाल की गिरफ्तारी के समय पर सवाल उठाया है। आम चुनाव से पहले केजरीवाल की गिरफ्तारी को लेकर सुप्रीम कोर्ट ने ईडी से जवाब मांगा है। मामले की सुनवाई शुक्रवार को होने की

संभावना है। बता दें कि शराब नीति घोटाला मामले से जुड़ी मनी लॉन्ड्रिंग के मामले में ईडी द्वारा हुई अपनी गिरफ्तारी को लेकर केजरीवाल ने सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी है।

आप इससे इनकार नहीं कर सकते

न्यायमूर्ति संजीव खन्ना और न्यायमूर्ति दीपांकर दत्ता की पीठ ने अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल एसबी राजू से केजरीवाल की गिरफ्तारी के समय के सवाल पर जवाब मांगा है। साथ ही कोर्ट ने कहा कि 'जीवन और स्वतंत्रता ब्रेहद महत्वपूर्ण है। (शेष पृष्ठ 6 पर...)

खडगे ने कहा.. झूठों के सरदार हैं पीएम मोदी

जांजगीर (दावा)। लोकसभा चुनाव के तीसरे चरण से ठीक पहले छत्तीसगढ़ में सियासी घोटाला मामला तेज हो गया है। मंगलवार को कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खडगे ने जांजगीर लोकसभा सीट पर चुनावी रैली की। कांग्रेस प्रत्याशी के पक्ष में किये इस चुनावी रैली में खडगे ने बीजेपी और प्रधानमंत्री मोदी पर जमकर हमला बोला। उन्होंने मंच से चुनावी सभा को संबोधित करते हुए कहा कि यह चुनाव देश को एकता के साथ रखने का चुनाव है। यह चुनाव हमारे संविधान को बचाने और लोकतंत्र को बचाने का चुनाव है। खडगे ने आरोप लगाते हुए कहा कि पीएम मोदी झूठों के सरदार हैं, जो झूठ पर झूठ बोलते हैं।



जांजगीर की सभा में बीजेपी पर जमकर किया हमला, कहा.. मोदी भगाओं, देख बचाओं

अपनी पूरी ताकत झोंक दी है। छत्तीसगढ़ की इन 7 सीटों पर लगातार बीजेपी और कांग्रेस के केंद्रीय नेता और स्टार प्रचारकों की चुनावी रैलियां हो रही हैं। इसी कड़ी में आज जांजगीर लोकसभा में कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष

मल्लिकार्जुन खडगे चुनाव प्रचार करने पहुंचे। जांजगीर से कांग्रेस प्रत्याशी शिव डहरिया के पक्ष में प्रचार करने पहुंचे खडगे ने आम लोगों को संबोधित करते हुए कांग्रेस के न्याय पत्र और पार्टी की जानकारी देते हुए बीजेपी पर जमकर हमला बोला।

उन्होंने कहा कि केंद्र में मौजूदा सरकार गरीबों का कभी भी पक्ष नहीं लेते, केवल बात करते हैं। बीजेपी वाले गरीबों की बात नहीं करते हैं। लेकिन अडानी-अंबानी की आमदनी बढ़ते हैं। सुबह से शाम तक हमें और कांग्रेस को गलियां देते हैं। सोनिया गांधी, राहुल गांधी और प्रियंका गांधी को गाली देते हैं। बीजेपी को 400 पर के नारा पर चलतवार करते हुए खडगे ने कहा कि पीएम मोदी और उनके चेले बार-बार 400 पर का नारा दे रहे हैं, लेकिन यह नारा गरीबों की भलाई, पिछड़े, आदिवासियों और दलितों के लिए नहीं (शेष पृष्ठ 6 पर...)

अनंतनाग-राजौरी लोकसभा सीट पर 7 की बजाय 25 मई को होगा चुनाव

जम्मू। भारतीय निर्वाचन आयोग ने अनंतनाग में मतदान की तारीख बदल दी है। अब 7 मई की बजाय यहां पर 25 मई को वोट डाले जाएंगे। निर्वाचन आयोग ने मंगलवार को जानकारी देते हुए बताया कि यहां नामांकन की पूरी प्रक्रिया पूरी हो गई है। ऐसे में अनंतनाग और राजौरी लोकसभा सीट पर अन्य कोई बदलाव नहीं होगा। केवल मतदान की ही तारीख में बदलाव किया गया है।



की जम्मू-कश्मीर इकाई के प्रमुख रवींद्र रेना, अपनी पार्टी के अध्यक्ष अल्लाफ बुखारी, पीपुल्स कॉन्फ्रेंस नेता इमरान अंसारी सहित कई अन्य ने इस संबंध में निर्वाचन आयोग को अपना निवेदन सौंपा था। गौरतलब है कि कश्मीर घाटी के श्रीनगर, अनंतनाग-राजौरी और बारमूला लोकसभा सीट पर मतदान होगा है। इन तीनों सीटों पर भारतीय जनता पार्टी चुनाव नहीं लड़ रही है। यहां असली मुकामला पीडीपी और एनसी के बीच है। एनसी को कांग्रेस पार्टी ने समर्थन दिया है। ऐसे में देखना है कि तीनों सीटों पर किसका पलड़ा भारी रहता है।

आयोग को पत्र लिखकर खराब मौसम के आधार पर अनंतनाग-राजौरी सीट पर चुनाव स्थगित करने की मांग की थी। भारतीय निर्वाचन आयोग ने स्थगित तो नहीं किया लेकिन इसे आगे बढ़ा दिया है। भाजपा

अयोध्या: आज रामलला के दर्शन करेंगी राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू, सरयू पूजन और हनुमान आरती में भी होंगी शामिल

लखनऊ। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू बुधवार को अयोध्या जाएंगी। उनका आगमन शाम चार बजे महर्षि वाल्मीकि अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर होगा। यहां से हनुमानगढ़ी के लिए रवाना होंगी। शाम 4.50 बजे हनुमंत लला की आरती में शामिल होंगी। इसके बाद शाम 5.45 बजे सरयू पूजन और आरती करेंगी।



यहां से रामजन्मभूमि पहुंचकर शाम 6.45 बजे रामलला के दर्शन कर आरती में शिरकत करेंगी। शाम 7.15 बजे कुबेर टीला के दर्शन करेंगी। इसके बाद हवाई अड्डे से नई दिल्ली के लिए प्रस्थान करेंगी। राष्ट्रपति के प्रेस सचिव अजय सिंह के अनुसार राष्ट्रपति के सभी कार्यक्रमों का कवरेज दूरदर्शन नेशनल न्यूज चैनल की ओर से किया जाएगा।

राष्ट्रपति के आगमन पर सख्त रहेगा सुरक्षा घेरा
राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू के आगमन पर बुधवार

को जिले में सुरक्षा घेरा सख्त रहेगा। एयरपोर्ट से लेकर राम मंदिर व सरयू तट तक आधुनिक असलों से लैस जवान जगह-जगह मुस्तैद रहेंगे। मंगलवार को ही पुलिस अधिकारियों ने सुरक्षा एजेंसियों व अन्य जवानों के साथ हिस्सल भी किया है।

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू बुधवार को अयोध्या दौर पर हैं। शाम चार बजे एयरपोर्ट से उतरकर वह राम मंदिर व सरयू तट पर जाएंगी। इस दौरान सभी मार्गों पर पड़ने वाले मकानों पर असलहों से लैस जवान तैनात किए गए हैं। पुलिस के अलावा सीआरपीएफ, आरएफएफ, एटीएस व पीएसी के जवान भी (शेष पृष्ठ 6 पर...)

मणिपुर में दो महिलाओं की निर्वस्त्र परेड मामले में बड़ा खुलासा, पुलिस ने ही किया था भीड़ के हवाले

नई दिल्ली। पिछले साल मणिपुर हिंसा के दौरान भीड़ से बचने के लिए मदद की गुहार लगाने वाली कुकी-जोमी समुदाय की दो महिलाओं को पुलिस ने ही दंगाइयों को सौंप दिया था। इसके बाद भीड़ ने दोनों महिलाओं को निर्वस्त्र कर घुमाया और उनका चीन उड़ोडन भी किया था। यह बात सीबीआई ने अपने आरोपपत्र में कही है।



मणिपुर में चार मई को हुई इस घटना का वीडियो जुलाई में सामने आया था। वीडियो में भीड़ महिलाओं को निर्वस्त्र परेड कराती दिख रही थी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र

मोदी ने भी इस घटना पर पीड़ा जाहिर की थी। प्रधानमंत्री ने कहा था इस घटना ने 140 करोड़ देशवासियों को शर्मसार किया है। सुप्रीम कोर्ट की नाराजगी के बाद मामले की जांच सीबीआई को सौंपी गई थी। सीबीआई ने पिछले साल 16 अक्टूबर को गुवाहाटी में

बाबा रामदेव के खिलाफ अदालती कार्यवाही पर आईएमए अध्यक्ष के मीडिया में दिए बयान से सुप्रीम कोर्ट नाराज

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने योग गुरु बाबा रामदेव की कंपनियों के भ्रामक विज्ञापनों से उत्पन्न अदालती कार्यवाही के खिलाफ इंडियन मेडिकल एसोसिएशन (आईएमए) के अध्यक्ष डॉ आर वी अशोकन की टिप्पणियों को गंभीरता से लिया और मंगलवार को उसके अधिवक्ता से कहा कि आप यह कैसे तय करेंगे कि हमें अपनी कार्यवाही किस तरह से करनी चाहिए। न्यायमूर्ति हिमा कोहली और न्यायमूर्ति अहसानुद्दीन अमानुल्लाह की पीठ ने मौखिक रूप से यह टिप्पणी करते हुए बाबा रामदेव की ओर से पेश वरिष्ठ अधिवक्ता मुकुल रोहतगी को इस मामले में वर्तमान आईएमए

अध्यक्ष डॉ अशोकन द्वारा मीडिया के समक्ष दिए गए बयानों को अदालत के रिकॉर्ड पर लाने की अनुमति दी। पीठ ने आईएमए के वकील से मौखिक रूप से कहा, आप यह कैसे तय करेंगे कि हमें अपनी कार्यवाही किस तरह से करनी चाहिए। न्यायमूर्ति कोहली की पीठ ने इस मामले में अगली सुनवाई के लिए सात मई की तारीख मुकर्रर करते हुए श्री रोहतगी को दो दिनों के भीतर इस संबंध में (बयान) एक आवेदन दाखिल करने की अनुमति देते हुए कहा, 'हम इस मुद्दे से अलग से निपटेंगे।' इससे



कार्यवाही पर 'दुर्भाग्यपूर्ण' करने वाली' टिप्पणियां हैं। पीठ ने श्री रोहतगी की दलील पर जवाब देते हुए पीठ ने आईएमए के अधिवक्ता से कहा, यह सबसे गंभीर बात होगी...परिणामों के लिए तैयार रहें। समाचार रिपोर्ट में डॉक्टर अशोकन के हवाले से कहा गया कि यह 'दुर्भाग्यपूर्ण' है

कि उच्चतम न्यायालय ने आईएमए और निजी प्रैक्टिस करने वाले डॉक्टरों की प्रथाओं की भी आलोचना की। उन्होंने दावा किया, अध्यक्ष के हवाले वाली खबरों को सामने लाने लाने की मांग करते हुए कहा कि ये अदालती कार्यवाही पर 'दुर्भाग्यपूर्ण' और 'परेशान करने वाली' टिप्पणियां हैं। पीठ ने श्री रोहतगी की दलील पर जवाब देते हुए पीठ ने आईएमए के अधिवक्ता से कहा, यह सबसे गंभीर बात होगी...परिणामों के लिए तैयार रहें। समाचार रिपोर्ट में डॉक्टर अशोकन के हवाले से कहा गया कि यह 'दुर्भाग्यपूर्ण' है

जिले की बेहतरी के लिए सभी विभाग उत्कृष्ट कार्य करें - कलेक्टर

- अभिभावक अपने बच्चों के लिए बनाएं सकारात्मक माहौल
- गर्मी के मौसम को ध्यान में रखते हुए कम पानी वाली फसल लेने के लिए किसानों को करें प्रेरित
- साप्ताहिक समय सीमा की बैठक आयोजित

लोकसभा निर्वाचन 2024 अंतर्गत सफलतापूर्वक मतदान संपन्न होने पर सभी को दी हार्दिक बधाई



अपने बच्चों को तनाव से दूर रखें और उनका ध्यान रखें। किसी भी बच्चे की तुलना अन्य बच्चों से नहीं करें। अभिभावक अपने बच्चों के प्रति सजग रहें और उनके लिए सकारात्मक माहौल बनाएं। उन्होंने श्रम विभाग के कार्यों में गति लाने के निर्देश दिए। आरोहण बीपीओ सेंटर टेड्रेसर की गतिविधियों के संबंध में जानकारी ली।

कलेक्टर ने कहा कि दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों में किसान धान की खेती करते हैं, जिसके लिए अधिक पानी की आवश्यकता होती है। इसके कारण ट्रांसफार्मर पर लोड पड़ता है और लो-वोल्टेज की समस्या उत्पन्न होती है। उन्होंने उप संचालक कृषि से कहा कि गर्मी के मौसम को ध्यान में रखते हुए कम पानी वाले फसल लेने के लिए किसानों को प्रेरित करें। इसके साथ ही उद्यानिकी विभाग अंतर्गत ऐसी फसलें, जिनमें कम पानी की जरूरत होती है, किसानों को बताएं। इस अवसर पर वनमंडलाधिकारी आयुष जैन, अपर कलेक्टर सी.एल. मारकण्डेय, अपर कलेक्टर श्रीमती इंदिरा नवीन प्रताप सिंह तोमर, नगर निगम आयुक्त अभिषेक गुप्ता, एसडीएम राजनांदगांव अरुण विश्वकर्मा सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

राजनांदगांव (दावा)। कलेक्टर संजय अग्रवाल ने आज कलेक्टर सभाकक्ष में साप्ताहिक समय-सीमा की बैठक ली। बैठक में कलेक्टर ने लोकसभा निर्वाचन 2024 अंतर्गत सफलतापूर्वक मतदान संपन्न होने पर सभी को हार्दिक बधाई दी। कलेक्टर ने कहा कि मतदान कार्य के दौरान सभी विभागों ने अपना कार्य अच्छी तरह से किया।

आगे भी विस्तारीय पंचायत एवं नगरीय निर्वाचन के लिए बेहतर कार्य करना है। कलेक्टर ने कहा कि जिले की बेहतरी के लिए सभी विभाग अपना उत्कृष्ट कार्य करें, इसके लिए योजनाबद्ध तरीके से कार्य करने की जरूरत है। सहकारिता विभाग किसानों को

सुविधाओं के दृष्टिगत एटीएम सुविधा बढ़ाने की दिशा में कार्य करें। उन्होंने कहा कि गर्मी को ध्यान में रखते हुए पेयजल की समस्या ग्रामों में नहीं होना चाहिए। इसके लिए लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग को आवश्यक निर्देश दिए।

सिंचाई विभाग किसानों को सुविधाएं उपलब्ध कराने के साथ ही खेती का रकबा बढ़ाने के लिए कार्य करें। उन्होंने कहा कि निर्वाचन कार्यों के बावजूद भी सभी जनपद सीईओ ने भी निरंतर कार्य किया है। जिले में सबसे ज्यादा मनरेगा श्रमिकों ने कार्य किया है। उन्होंने कहा कि सभी विभाग जनहित में उत्कृष्ट कार्य करने की दिशा में कार्य करें। कलेक्टर

ने ग्रामीण क्षेत्रों में राजस्व शिविर लगाने के निर्देश दिए। जाति, आय, निवास प्रमाण पत्र बनाने के साथ ही राजस्व प्रकरणों के निराकरण के लिए योजनाबद्ध तरीके से कार्य करें। उन्होंने कहा कि कार्य परिणाममूलक होना चाहिए।

कलेक्टर संजय अग्रवाल ने कहा कि डीएमएफ मद से जनहित के कार्यों के लिए सभी विभाग प्रस्ताव भेजें। राशन की आपूर्ति, स्वास्थ्य संबंधी सुविधाएं, पेंशन जैसे महत्वपूर्ण कार्य अबाधित रूप से चलते रहें। उन्होंने कहा कि कक्षा 10वीं एवं 12वीं के परीक्षा परिणाम आने वाले हैं। इसे ध्यान में रखते हुए अभिभावकों का यह दायित्व है कि वे

टीटीई स्टाफ द्वारा रेल यात्रियों से रुबरु होकर किया उनकी समस्याओं का त्वरित निवारण



डोंगरगाँव (दावा)। भारतीय रेलवे में डिजिटल पहलों के अनुरूप शिकायत प्रबंधन प्रणाली को पूरी तरह डिजिटल करते हुए रेल यात्रियों की शिकायतों के निवारण की प्रक्रिया को सुधारने एवं तेज करने के लिये रेलवे के द्वारा रेल मदद जाम से एक एप जारी किया है। रेल मदद एप यात्रियों की शिकायतों को दर्ज कर शिकायतों के निवारण की स्थिति के बारे में उन्हें लगातार जानकारी मुहैया कराता है।

यात्री को इस एप पर रजिस्ट्रेशन के बाद एसएमएस के जरिये शिकायत संख्या तुरंत उपलब्ध कराकर रेलवे द्वारा उठाये गये कदमों की जानकारी भी एसएमएस द्वारा दी जाती है। ट्रेनों से सफर करने वाले यात्रियों को कई तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। ट्रेन की यात्रा के समय अलग-अलग समस्याओं से यात्रियों को परेशान होना होता है। कभी खाने में समस्या होती है तो कभी सीट को लेकर परेशानी होती है, खानपान-पीना बेचने वाले वेंडर मनमाने रेट मांगते हैं तो कभी एसी में मिलने वाले बेड रोल से शिकायत होती है।

वर्षिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक के निर्देश पर कार्रवाई

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे नागपुर मंडल द्वारा यात्रियों की इन सभी

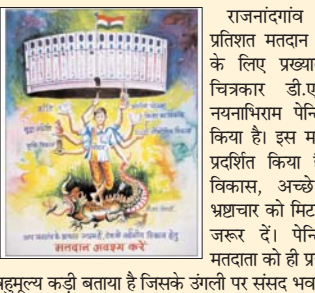
वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक के निर्देश पर कार्रवाई

शिकायतों का त्वरित निवारण करने के उद्देश्य से दिल्लीय सिंह वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक मंडल वाणिज्य प्रबंधक द्वारा रेल गाइडों में कार्यरत टी टी ई स्टाफ को निर्देशित किया गया है कि रेल मदद से मिलने वाले शिकायतों के अलावा वे रेल गाइडों में सफर करने वाले रेल यात्रियों से रूबरू होकर यात्रा के दौरान होने वाले असुविधाओं के बारे में जाने तथा उनकी समस्याओं की निदान तुरंत करें।

साथ ही कंट्रोल रूम में लगातार संपर्क बनाने रखें और मिलने वाले सभी शिकायतों के निवारण त्वरित करें। मंडल से गुजरने वाली सभी रेल गाइडों में कार्यरत टीटीई कर्मियों द्वारा लगातार इस दिशा में विशेष कदम उठाए जा रहे हैं, वहीं रेल मदद के द्वारा प्राप्त सभी शिकायतों के निवारण भी त्वरित किया जा रहा है और शिकायतों के समाधान से यात्री संतुष्ट हो रहे हैं। दिल्लीय सिंह-वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक ने यात्रियों से रेल मदद के माध्यम तथा रेल गाइडों में कार्यरत रेल कर्मियों से संपर्क कर अपनी समस्याओं से अवगत कराने की अपील की ताकि उनकी शिकायतों का निवारण तुरंत किया जा सके, जिससे की उनकी रेल यात्रा सुगम व सुरक्षित हो।

पहला कॉलम...

शत-प्रतिशत मतदान के लिए पेन्टिंग



शांति देवी सिंह का निधन

राजनांदगांव (दावा)। शत प्रतिशत मतदान को प्रेरित करने के लिए प्रख्यात मॉडर्न आर्ट चित्रकार डी.एस.विद्याधी ने नयनाभिराम पेन्टिंग का निर्माण किया है। इस माध्यम से उन्होंने प्रदर्शित किया है कि देश के विकास, अच्छे सरकार और भ्रष्टाचार को मिटाने के लिए वोट जरूर दें। पेन्टिंग में उन्होंने मतदाता को ही प्रजातंत्र की सबसे बहुमूल्य कड़ी बताया है जिसके उंगली पर संसद भवन टिका हुआ है।

राजनांदगांव (दावा)। शान्ति देवी स्व. एच.डी. सिंह (सेवानिवृत्त विकासखण्ड अधिकारी) का आकस्मिक निधन एम्स रायपुर में हो गया, वे 73 वर्ष आयु की थीं। सरल, मिलनसार आध्यात्मिक महिला थीं। वे एक सशक्त महिला के रूप में जानी जाती थीं। वे ग्राम कोडिकसा में जनप्रतिनिधि के रूप में चुनी गईं तथा शाला प्रबंधन एवं विकास समिति की अध्यक्ष भी रहीं।

वे अपने पीछे दो पुत्र शेषनाथ सिंह, जैनेन्द्र कुमार सिंह व दो पुत्री श्रीमति अनिता सिंह और श्रीमति ममता सिंह के साथ नाना पोतों का भारपूर परिवार छोड़कर गईं हैं। उनका अंतिम संस्कार चौकी स्थित मुक्तिधाम में रीति रिवाज के अनुसार किया गया। कोडिकसा और चौकी नगर सहित दुर्ग, राजनांदगांव, छुरिया आदि स्थानों से आए शुभचिंतकों ने भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की।

श्रीमती रिजवाना सोलंकी का निधन

खैराबाद (दावा)। नगर के दाऊचौरा वार्ड की निवासी श्रीमती रिजवाना सोलंकी की 26 वर्ष की अत्यायु में रायपुर स्थित डीके हॉस्पिटल में शनिवार 27 अप्रैल की रात तकरीबन 11:30 बजे इंतकाल हो गया। उन्हें रविवार 28 अप्रैल की दोपहर जोहर की नमाज के बाद दाऊचौरा स्थित कब्रिस्तान में मुस्लिम रिवाज अनुसार सुपुर्द खक किया गया।

राईस मिलर्स 8 मई तक उठा सकेंगे धान

बालोद (दावा)। अपर कलेक्टर कलेक्टर चन्द्रकांत कौशिक ने आज संयुक्त जिला कार्यालय के सभाकक्ष में जिले के राईस मिलर्स की बैठक ली। बैठक में ऐसे राईस मिलर जिनका धान उठाव हेतु अधिक मात्रा में शेष है, उन सभी राईस मिलरों को प्रतिदिन धान उठाव का लक्ष्य बनाते हुए धान का अंतिम उठाव 08 मई 2024 तक करने का निर्णय लिया गया है। जिला खाद्य अधिकारी तुलसी ठाकुर ने बताया कि खरीफविपणन वर्ष 2023-24 में समर्थन मूल्य पर 143 धान खरीदी केन्द्रों के माध्यम से 07 लाख 48 हजार 714 मेट्रिक टन धान की खरीदी की गई है। खरीदी गए धान का पूर्ण डीओ जारी किया जा चुका है। उन्होंने बताया कि अब तक कुल 07 लाख 36 हजार 999 मेट्रिक टन धान उठाव किया जा चुका है।

आयुक्त पहुंचे जल सयंत्र गृह मोहारा

27 एमएलडी फिल्टर प्लांट के मोटर पंप मरम्मत कार्य का लिया जायजा

राजनांदगांव (दावा)। नगर निगम आयुक्त अभिषेक गुप्ता जल सयंत्रगृह मोहारा एवं एनीकट का निरीक्षण कर जल भरण की स्थिति की जानकारी लिए, इसके अलावा 27 एमएलडी फिल्टर प्लांट के 10 एचपी मोटर पंप मरम्मत कार्य का जायजा लेकर प्लांट में अतिरिक्त रखे पंप, मशीनों को दुरुस्त रख अन्य आवश्यक व्यवस्था दुरुस्त करने के निर्देश कार्यपालन अभियंता यू.के.रामटेके को दिये।



प्लांट के पंप, मशीनें एवं आवश्यक व्यवस्था दुरुस्त रखने दिये निर्देश

आयुक्त श्री गुप्ता आज जल सयंत्रगृह मोहारा का निरीक्षण किये जहाँ 27 एमएलडी फिल्टर प्लांट के 10 एचपी मोटर पंप मरम्मत कार्य किया जा रहा था जिसे देख उन्होंने कहा कि मोटर जल्द मरम्मत कर चालू करें इसके अलावा प्लांट में अतिरिक्त रखे पंप को चालू रखे ताकि मोटर खराब होने पर तुरंत बदला जा सके।

शहर की सभी उच्च स्तरीय जलागार (टंकी) को पूरा भरे, वाल्वमैन वाल्व खोलने में कोताही न बरते, किसी प्रकार की कठिनाई पर उच्च अधिकारियों को अवगत करावे।

उन्होंने मोहारा एनीकट के जल स्तर की जानकारी लेकर कार्यपालन अभियंता श्री रामटेके से कहा कि जल स्तर कम होने पर मोगरा जलाशय से पानी लेने प्रक्रिया पूर्ण कर लेवे। इसके अलावा अमृत मिशन एवं निगम की टीम सामंजस्य बनाकर कार्य करें तथा पेयजल संबंधी पार्श्वों एवं नागरिकों की समस्या का यथासंभव निराकरण करें।

निरीक्षण के दौरान जल विभाग के लिफ्टिक तुषार शुक्ला, जलसयंत्र गृह के लक्ष्मीकांत देवांगन एवं अमला उपस्थित था।

पहली बार 'संस्कार कक्षाएं' एनबी गुप ऑफ स्कूल्स द्वारा विशेष संस्कार कक्षा

राजनांदगांव (दावा)। एनबी गुप ऑफ स्कूल्स द्वारा स्थानीय नीरज परेंटर प्राइड स्कूल, बल्देववाग में विशेष 'संस्कार कक्षाएं' का आयोजन एक मई से किया जा रहा है। इस संस्कार कक्षा में सनातन धर्म से जुड़ी बारीकियों का अध्ययन आचार्य पंडित अनिल तिवारी के मार्गदर्शन में शास्त्रों द्वारा किया जायेगा।

बच्चों में विघटित होते संस्कृति तथा संस्कार को जागृत करने हेतु एनबी गुप के डायरेक्टर नीरज बाजपेयी द्वारा यह छोट्टी सी पहल की जा रही है ताकि बच्चे सनातन धर्म को समझ सकें। संस्कार कक्षा में पूजन विधि (क्यों एवं कैसे), हमारी सनातन परम्परा का ज्ञान, आवश्यक मंत्रोच्चार, आरती, चालीसा एवं भजन का महत्व तथा आवश्यकता के साथ उपयोगिता, नित्यक्रिया, मुहूर्तों का ज्ञान, सोलह संस्कारों का वर्णन, आसन की उपयोगिता, शुभ संकेतों का यथोचित ज्ञान, तिथि-पक्षों का विधिवत् ज्ञान इत्यादि का पाठ्यक्रम बनाकर बच्चों को सिखाया जायेगा। यह संस्कार विधि दो पालियों में ली जायेगी।

एक पाली में कक्षा नर्सरी से चौथी तथा दूसरी पाली, कक्षा पांचवी से बड़े बच्चों की ली जायेगी। यह संस्कार विधि वर्तमान की आवश्यक आवश्यकता है जिन्हें हमें अपने बच्चों को देना अत्यंत आवश्यक है। नीरज बाजपेयी का पालकों से विशेष आग्रह है कि इस कक्षा का लाभ बच्चों को अवश्य दिलाये ताकि बच्चों को संस्कारित एवं नैतिक मूल्यों की जानकारी हो। संस्कार कक्षा हेतु बच्चों व पालकों में उत्सुकता देखी जा रही है।

युगांतर के समर कैंप में विविध आयोजन

राजनांदगांव (दावा)। 30 अप्रैल शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी युगांतर पब्लिक स्कूल में नगर की सभी स्कूलों के विद्यार्थियों के लिए समर कैंप का बहुआयामी आयोजन प्रभावकारी रूप में रखा है। विद्यार्थियों को योगा, जुम्बा, बैडमिंटन, स्केटिंग, कराटे, चैस, स्विमिंग, चित्रकला, कैलीग्राफी, नृत्य, संगीत, रोबोटिक्स के प्रशिक्षण के साथ एडवेंचर्स स्पोर्ट्स का भी प्रशिक्षण दिया जा रहा है, जिसका भी बच्चे उत्साहपूर्वक लुत्फ उठा रहे हैं।



इस आयोजन में विद्यालय के विद्यार्थियों के साथ नगर के सभी स्कूलों के विद्यार्थियों के बीच गजब का उत्साह बना हुआ है। बच्चे स्केटिंग, स्विमिंग आदि गतिविधियों में निहार ला रहे हैं। बच्चों के पालकगण भी अपने बच्चों की प्रतिभा विकसित होने पर आत्फुल्लित हैं। इस सन्दर्भ में विद्यालय की समर कैंप प्रभारी वंदना सिंह ने बताया कि विद्यार्थी नई उमंग और उत्साह के साथ भाग लेकर अपनी प्रतिभा विकास कर रहे हैं। इस समर

कैंप में विभिन्न राज्यों से आए विद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा सेवाएँ दी जा रही हैं। युगांतर के समर कैंप की सफलता को देखते हुए समर कैंप की प्रभारी वंदना सिंह को सन सिटी संस्कृति क्लब ने पांच दिवसीय योगा प्रशिक्षण शिविर में योगासन का प्रशिक्षण देने हेतु आमंत्रित किया है। इस अवसर पर विद्यालय के चेयरमैन विनोद सदानो, सेक्रेटरी विनय डड्डा, कोषाध्यक्ष मिश्रीलाल गोलछ, निदेशक (स्पोर्ट्स) सुशील कोठारी,

नगर के विद्यार्थियों में गजब का उत्साह

अजय सिंगी, नरेंद्र कोटडिया, प्राचार्य डॉ.मधु पी.चौधरी, पी.आर.ओ. स्पोर्ट्स ऑफिसर दिनेश प्रताप सिंह सहित युगांतर परिवार ने बड़ी संख्या में नगर के विद्यार्थियों द्वारा अपनी प्रतिभा को विकसित करने पर हर्ष प्रकट किया है। उन्होंने अपने बधाई संदेश में कहा कि समर कैंप में परंपरागत स्पोर्ट्स के साथ एडवेंचर्स स्पोर्ट्स जुड़ने से काफी रोचकता आ गई है। चित्रकला, विज्ञान, नृत्य, संगीत की सुन्दर छटा बिखरने से वातावरण उत्साहजनक हो गया है।

कैंप में विभिन्न राज्यों से आए विद्यालय के विद्यार्थियों के साथ नगर के सभी स्कूलों के विद्यार्थियों के बीच गजब का उत्साह बना हुआ है। बच्चे स्केटिंग, स्विमिंग आदि गतिविधियों में निहार ला रहे हैं। बच्चों के पालकगण भी अपने बच्चों की प्रतिभा विकसित होने पर आत्फुल्लित हैं। इस सन्दर्भ में विद्यालय की समर कैंप प्रभारी वंदना सिंह ने बताया कि विद्यार्थी नई उमंग और उत्साह के साथ भाग लेकर अपनी प्रतिभा विकास कर रहे हैं। इस समर

बुद्धभरदा सरकारी स्कूल में छात्राओं ने मारी बाजी

डोंगरगाँव (दावा)। विकासवर्द्ध के शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला बुद्धभरदा में 30 अप्रैल मंगलवार को परीक्षाफल घोषित कर सभी उपस्थित छात्र-छात्राओं को अंकसूची प्रदान किया गया। परीक्षा परिणाम में छात्राओं ने बाजी मारी है।

परीक्षा परिणामों में कक्षा छठवीं में कु. मानसी निषाद ने प्रथम, शुरुआक



मोहित सिन्हा ने द्वितीय, कक्षा सातवीं में कु.गिरमा साहू प्रथम, कु.महेक साहू द्वितीय एवं कु.ज्योति सिन्हा व कु.जीताञ्जली साहू संयुक्त रूप से तृतीय, कक्षा आठवीं में कु.संजना अडकने प्रथम, थानेश्वर साहू द्वितीय और कु. मीनाक्षी साहू ने तृतीय स्थान प्राप्त किया, इन सभी छात्रों को पुरस्कार प्रदान किया गया, इसके अतिरिक्त सर्वाधिक उपस्थिति वाले छात्रों को भी पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर स्कूल की प्रधानाधिका रेखा पटेल ने छात्रों को उद्बोधित करते हुए अनुशासन का महत्व बताते हुए कहा कि हमें न सिर्फ छात्र जीवन में अपितु पूरे उम्र भर अनुशासित रहना चाहिए। वरिष्ठ शिक्षक हरीश द्विवेदी ने कहा कि शिक्षक अनुभव की मूरत होते हैं, उनके मुख से निकला हर शब्द छात्रों के लिए मोती के समान होता है, जिसे छात्रों को हंस बनकर चुगना चाहिए। उक्त अवसर पर उपस्थित अन्य शिक्षकों मनीषा मिलिन्द, अशोक साहू एवं उमाशंकर साहू ने सभी छात्र-छात्राओं को बधाई और भविष्य के लिए शुभकामनाएं दी।

रेलवे स्टेशनों पर एक स्टेशन एक उत्पाद को अच्छा प्रतिसाद

राजनांदगांव (दावा)। भारतीय रेलवे में एक स्टेशन एक उत्पाद योजना का विस्तार करते हुए रेलवे स्टेशनों पर राष्ट्रीय डिजाइन संस्थान द्वारा डिजाइन किए गए स्टॉल स्थापित किये गए हैं। उल्लेखनीय है कि स्थानीय कारीगरों और कलाकारों को बढ़ावा देने के लिए यह योजना शुरू की गई है।



इस योजना का उद्देश्य भारत सरकार के लोकल विजन के लिए वोकल को बढ़ावा देना, स्थानीय उत्पादों के लिए बाजार उपलब्ध कराना तथा आय के अवसर सृजित करना, रेल यात्रियों को भारत की समृद्ध विरासत और स्थानीय उत्पादों का अनुभव करने का अवसर प्रदान करना, स्वदेशी/स्थानीय उत्पादों का

स्थानीय उत्पादों का प्रचार-प्रसार में भी मदद मिलेगी। एक स्टेशन एक उत्पाद पहल के माध्यम से यात्रियों के बीच उत्पादों की विविधता बढ़ाई है, जिससे यात्रियों में उत्साह और प्रतिसाद बढ़ा है। इस पहल के अंतर्गत स्टेशन पर उस स्थान के संबंधित उत्पादों की विशेषता को बढ़ावा मिल रहा है, जो स्थानीय विकास और उत्पादों की प्रमोशन में मददगार साबित हो रहा है। इस पहल के तहत यात्रागण उन स्थानीय उत्पादों का आनंद ले रहे हैं और समाज में सामाजिक और आर्थिक विकास की गति तथा रोजगार सृजन को बढ़ाने में सहायक सिद्ध हो रहा है।

श्री कृष्णा (एयरकुल) में
शानदार भीड़ भरा दूसरा समाह रोजाना 4 खेल
समय : 12, 3, 6 व 9 बजे
बाल्की की एडवंस बुकिंग प्रारंभ है।
प्रणव झा प्रॉडक्शन कृत
बी.ए. फाईनल ईयर
छत्तीसगढ़ी भाषा में
कलाकार - मन कुरेषी, दीक्षा जायसवाल, दादू साहू, अंजली चौहान, राजेश बाघमारे, जयंती मनहर आदि
ऑनलाईन बुकिंग paytm & bookmyshow.com

SILVER SCREEN MULTIPLEX
27th April to 02nd May 2024
RUSLAAN - 12:30, 03:30, 06:30 and 09:00 pm
बी.ए. फाईनल ईयर B A Final
12:00 and 03:00 pm
Bade Miyan Chote Miyan - 06:00 and 09:00 pm
Sumeet Mandi Mall, Rajnandgaon (C.G.) ☎ 8985600200

शुरुआक
बी.के 1-4-5
568-9 138-2 राजधानी 3-7-0
248-4 360-9

परीक्षा परिणाम के भय से तनाव एवं दबाव महसूस न करें बच्चे - कलेक्टर

राजनांदगांव (दावा)। कलेक्टर संजय अग्रवाल की उपस्थिति में परीक्षा परिणाम से बच्चों के मन में उत्पन्न निराशा और तनाव को दूर करने शिक्षकों एवं पालकों के लिए जिला प्रशासन एवं शिक्षा विभाग राजनांदगांव के संयुक्त तत्वावधान में जिला पंचायत के सभाकक्ष में प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर पुलिस अधीक्षक मोहित गर्ग, सीईओ जिला पंचायत सुश्री सुरेश सिंह, डीएफओ आयुष जैन, मुख्य वक्ता सचदेवा न्यू पीटी कॉलेज भिलाई के चिरंजीव जैन एवं संदीप जैन उपस्थित थे। दक्षता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम से जिले के विभिन्न स्कूलों एवं विकासखंड शिक्षा कार्यालय से चौडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से शिक्षक, पालक जुड़े रहे। प्रशिक्षण कार्यक्रम में शिक्षकों, पालकों एवं बच्चों की जिज्ञासाओं एवं उनके प्रश्नों का समाधान मुख्य अतिथियों द्वारा किया गया।

कलेक्टर संजय अग्रवाल ने शिक्षकों एवं पालकों से कहा कि बच्चों की कभी भी अन्य बच्चे से तुलना न करें, बच्चों को दुखी न करें और उन्हें हमेशा खुश रखना है। उनकी रुचि और भावनाओं को समझना है तथा संतुलन बनाए

रखना है। बच्चों के परीक्षा परिणाम आने वाले हैं। जिसके कारण वे तनाव एवं दबाव महसूस कर सकते हैं। इसके लिए मानसिक रूप से तैयार रहना है और घबराना नहीं है। अभिभावकों को समझना होगा कि उनके बच्चे ने बहुत अच्छा किया है। उन्होंने पालकों से कहा कि बच्चों की अभिरूचि को समझना होगा और उसी के अनुरूप पढ़ाई करानी चाहिए। आज विभिन्न क्षेत्र में कैरियर के लिए अच्छे अवसर हैं। बच्चे को उसकी रुचि के क्षेत्र की तैयारी कराना चाहिए। जिसमें उसका मन लगे और उसकी इच्छा हो। उस क्षेत्र में वह बहुत अच्छा कार्य कर सकते हैं। पढ़ना एक जीविकोपार्जन का साधन नहीं है। जीवन की सफलता परीक्षा परिणाम से नहीं होती है। ये सिर्फ कालिफाई के लिए होती है। बच्चों को डरने की जरूरत नहीं है। उन्होंने बच्चों को आसान तरीके से पढ़ने की समझाइश दी। समय पर रिविजन एवं ग्रुप स्टडी जैसे माध्यम से पढ़ाई करने पर तनाव नहीं होता है। बच्चे बेहतर करने की कोशिश करें। उन्होंने कहा कि दबाव किसी भी तरह का नहीं होना चाहिए। पुलिस अधीक्षक मोहित गर्ग ने कहा कि अभी के समय में प्रतियोगिता बढ़े है, तो तनाव भी बढ़े है। इंटरनेट, स्मार्ट क्लास, सोशल मीडिया आने के बाद हर बच्चे के पास रिसोर्स है। उसकी वजह से प्रतियोगिताएं बढ़े है और तनाव भी बढ़े है। कोई भी परीक्षा इतनी महत्वपूर्ण नहीं होती जो आपके जीवन से बड़ा हो। उन्होंने बच्चों से कहा कि कोई भी परीक्षा या कोई भी क्षेत्र जीवन

जिला प्रशासन एवं शिक्षा विभाग के संयुक्त तत्वावधान में तनाव दूर करने के लिए दक्षता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम किया गया आयोजित



बड़ा नहीं होता है। जीवन असुल्य है। प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी क्षेत्र में फेल जरूर होते हैं। मेहनत करने के लिए जीवन में समय मिलता है। बच्चों में भावनात्मक विकास हो रहा है। उन्होंने कहा कि आज अच्छ नहीं कर पाए हैं तो, कल जरूर अच्छ कर पाएंगे।

जिला पंचायत सीईओ सुश्री सुरेश सिंह ने कहा जीवन में प्रतियोगिता हमेशा रहेगी। जीवन में परीक्षा से तनाव रहता है यह जीवन का हिस्सा है इससे सीखना होगा। यह ऊर्जा देता है, पढ़ाई जरूर करना है। नकारात्मक सोच नहीं रखना चाहिए। सभी के जीवन में तनाव रहता है। बच्चों को इससे सीखना होगा। उन्होंने कहा कि अभिभावक या परिवार का कोई भी सदस्य बच्चों के साथ कुछ समय बिताये तो बहुत अच्छ प्रभाव पड़ता है। उनकी बातों को समझ सकते हैं। उनकी इच्छाओं को जान सकते हैं। जिससे उनकी रुचि के अनुरूप कार्य किया जा सकता है। बच्चों के नकारात्मक सोच को दूर कर सकते हैं। बच्चों में किसी भी तरह से दबाव नहीं डालना चाहिए। उन्हें प्रोत्साहित करना चाहिए। उन्हें अच्छे सपने देखने देना चाहिए। उसे प्राप्त करने की लालसा बढ़ाना चाहिए। वनमंडलाधिकारी आयुष जैन ने कहा सपने देखना चाहिए। उसके लिए मेहनत करनी पड़ेगी। जिसमें रुचि है उसी विषय को लेना चाहिए। बच्चों के लिए 3 बातों को ध्यान रखना चाहिए। अच्छा हार्डवर्क, अच्छी दिशा और आनंद लेकर सफलता पा सकते हैं।

बच्चों में एक कैरियर विकल्प नहीं होना चाहिए। सचदेवा न्यूपीटी कॉलेज भिलाई के संचालक चिरंजीव जैन ने कहा कि पालक बच्चों के साथ कम से कम एक घंटे का समय बितायें। उन्होंने बच्चों को मित्र बनाने कहा। उन्हें खुलने का समय देने कहा। बच्चों को अभिभावकों में संवाद स्थापित करने कहा। जिससे बच्चों की रुचि, इच्छा, उनकी सोच से परिचित हो सकें। उन्होंने कहा बच्चों के ऊपर दबाव नहीं डालना चाहिए उन्हें तनाव से दूर रखना चाहिए। पालकों को बच्चों की योग्यता और उसकी क्षमता को पहचानना चाहिए। उसी के आधार पर बच्चों को समझाईश दिया जा सकता है। सचदेवा न्यूपीटी कॉलेज भिलाई के संदीप जैन ने भी शिक्षकों एवं पालकों को अच्छ प्रभाव पड़ता है। उनकी बातों को समझ सकते हैं। उनकी इच्छाओं को जान सकते हैं। जिससे उनकी रुचि के अनुरूप कार्य किया जा सकता है। बच्चों के नकारात्मक सोच को दूर कर सकते हैं। बच्चों में किसी भी तरह से दबाव नहीं डालना चाहिए। उन्हें प्रोत्साहित करना चाहिए। उन्हें अच्छे सपने देखने देना चाहिए। उसे प्राप्त करने की लालसा बढ़ाना चाहिए। वनमंडलाधिकारी आयुष जैन ने कहा सपने देखना चाहिए। उसके लिए मेहनत करनी पड़ेगी। जिसमें रुचि है उसी विषय को लेना चाहिए। बच्चों के लिए 3 बातों को ध्यान रखना चाहिए। अच्छा हार्डवर्क, अच्छी दिशा और आनंद लेकर सफलता पा सकते हैं।

धार्मिक साहू का सुयश : जिला साहू संघ ने दी बधाई

राजनांदगांव (दावा)। जीवन में प्रत्येक व्यक्ति के साथ कभी खुशी तो कभी गम का अनुभव होता है। आज जिला साहू संघ के पूर्व महामंत्री स्व. पूरन साहू का जन्मदिन है, संयोग ही कहा जाय कि उनके सुपुत्र धार्मिक साहू स्वामी आत्मानंद स्कूल से कक्षा 4 में 1st rank 97% अंक लेकर उत्तीर्ण हुए हैं। निश्चित रूप से एक पुत्र धार्मिक के इस उपलब्धि पर उनकी मां अंजु साहू, ऐश्वर्या साहू, पूर्वी साहू के अलावा परिवार तथा धार्मिक के जिला साहू संघ के अध्यक्ष भागवत साहू, महामंत्री नीलमणि साहू, डॉ.मोक्ष साहू, महेश्वर साहू उपाध्यक्ष आदि ने बधाई शुभकामनायें दी है।

अपना स्थान दर्ज किया है। इसका श्रेय उनके माता श्री श्रीमती अंजु साहू को जाता है। विपम परिस्थितियों में भी परिवार को संयोजित कर बच्चों को संस्कारित करने में तन मन लगा दिए हैं, उनके हैसले को नमन करता हूँ साथ ही पूर्व महामंत्री स्व. पूरन साहू जी को जिला साहू संघ राजनांदगांव की ओर से जन्मदिन पर विभ्रम श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। पुत्र धार्मिक के इस उपलब्धि पर उनकी मां अंजु साहू, ऐश्वर्या साहू, पूर्वी साहू के अलावा परिवार तथा धार्मिक के जिला साहू संघ के अध्यक्ष भागवत साहू, महामंत्री नीलमणि साहू, डॉ.मोक्ष साहू, महेश्वर साहू उपाध्यक्ष आदि ने बधाई शुभकामनायें दी है।

जग्गी हत्याकांड: याहया देबर ने कोर्ट में किया सरेंडर

रायपुर (आरएनएस)। जग्गी हत्याकांड मामले में आरोपी रायपुर महापौर एजाज देबर के भाई याहया देबर ने मंगलवार को रायपुर जिला कोर्ट में सरेंडर कर दिया। याहया को जग्गी हत्याकांड में 17 साल पहले दोषी करार दिया गया था। इस मामले में हाईकोर्ट ने इसी महीने अपने फैसले में सभी आरोपियों की सजा बरकरार रखी है। मामले में दोषी पाए गये सभी आरोपी एक-एक कर सरेंडर कर रहे हैं। शूटर चिचन सिंह सहित एक अन्य आरोपी ने पहले ही सरेंडर कर दिया था।

बता दें कि रामवतार जग्गी हत्याकांड 2003 में अजीत जोगी के शासनकाल में हुआ था। जिसका एफआईआर स्वर्गीय विद्याचरण शुक्ल के दबाव में मोदहापार थाने में दर्ज हुआ था, जिसमें 32 आरोपियों के नाम

सरस्वती शिशु मंदिर नागतराई का परीक्षा परिणाम शत-प्रतिशत रहा

राजनांदगांव (दावा)। सरस्वती शिशु मंदिर पूर्व माध्यमिक शाला नागतराई में शिक्षण सत्र 2023-24 का परीक्षा परिणाम दिनांक 30 अप्रैल को घोषित किया गया जिसमें सभी विद्यार्थी उत्तम अंकों के साथ उत्तीर्ण हुये कक्षा अरुण में प्रथम श्रेणी सिन्हा, द्वितीय देविता टेम्बुकर, तृतीय स्थान दिव्यनशु यादव कक्षा उदय में प्रथम स्थान पर चित्रांशु पटेल, दूसरा स्थान धैर्य साहू, तीसरा स्थान गीरी वर्मा रही। कक्षा प्रथम में प्रथम स्थान पर शैलेश पटेल दूसरा चेतन्य वर्मा, तीसरा स्थान पर नितेश चौधन, कक्षा दूसरी में प्रथम स्थान पर कौशल साहू, दूसरा हनुमती कौशल एवं तीसरा डिव्यल पटेल रही। कक्षा तृतीय में प्रथम स्थान पर दिव्या जगनायक, दूसरा डोमेश वर्मा एवं तीसरा स्थान पर यश गोस्वामी रह, कक्षा चतुर्थ में प्रथम स्थान गोकुल लौरे, दूसरा हिमांशु पटेल एवं तीसरा लुमन पटेल रही, कक्षा पंचम में प्रथम तोषण देशमुख, दूसरा स्थान वासु यादव, तीसरा स्थान दीपिका सिन्हा रही। एवं कक्षा षष्ठम में प्रथम स्थान में उमा गोस्वामी दूसरा स्थान पर आदित्य वर्मा एवं तीसरा स्थान पर हेमंत ठाकरे रहा। सभी को स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मानित किया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि भुवन दास वर्मा पूर्व सरपंच एवं पुरन पटेल संयोजक स. शिशु मंदिर रहे एवं अध्यक्षता माखन लाल पटेल ने किया। इस अवसर पर सभी पालक एवं सदस्यगण उपस्थित रहे। विद्यालय के प्रधानाचार्य ए. आर. पटेल, आचार्य राजेंद्र टंडन, परीक्षा प्रमुख चुरामन दास साहू, एवं दीदीयं अनीता देशमुख, जागृति लौरे, मंजु साहू एवं पूजा ठाकरे ने समस्त भैया-बहनो के उज्वल भविष्य की शुभकामना की।

पूर्व विशेष सचिव और मार्कफेड एमडी मनोज सोनी को ईडी की टीम ने किया गिरफ्तार

रायपुर (आरएनएस)। कस्टम मीलिंग घोटाले में ईडी ने खाद्य विभाग के पूर्व विशेष सचिव और मार्कफेड एमडी मनोज सोनी को ईडी की टीम ईओडब्ल्यू ऑफिस से गिरफ्तार कर स्पेशल कोर्ट ले आई। ऐसा तब हुआ जब मनोज सोनी इसी मामले में अपना बयान दर्ज करने के लिए ईओडब्ल्यू ऑफिस पहुंचे थे। ईडी ने मनोज सोनी को स्पेशल कोर्ट में पेश कर 10 दिन की रिमांड मांगी है। मिली जानकारी के अनुसार मनोज सोनी 175 करोड़ के कस्टम मीलिंग घोटाले में बयान देने ईओडब्ल्यू पहुंचे थे। पृष्ठताछ के दौरान ही ईडी की टीम अनजान पहुंची और मनोज सोनी को अपनी गाड़ी में बंधकर लेकर चली गई।

इधर ईओडब्ल्यू ने भी कस्टम मीलिंग घोटाले में जांच तेज कर दी है। हजारों करोड़ के घोटाले में कथित मास्टर माइंड रोशन चंद्रकर से सोमवार को पृष्ठताछ हुई थी और मंगलवार को खाद्य विभाग के पूर्व विशेष सचिव और ब्रीवोसपलन अधिकारी मनोज सोनी को पृष्ठताछ के लिए ईओडब्ल्यू तलब किया गया है। मनोज सोनी मार्कफेड के एमडी भी रहे हैं। मनोज सोनी के खिलाफ ईओडब्ल्यू में भी केस दर्ज है। सोनी के ठिकानों पर ईडी ने दो बार छाप भी मार चुकी है।

रेलवे सुरक्षा बल द्वारा स्टेशनों पर यात्रियों हेतु शीतल पेय जल सेवा मुहिय

राजनांदगांव (दावा)। दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे, नागपुर मंडल के महत्वपूर्ण रेल स्टेशनों पर धीमन गर्मी को देखते हुए रेलयात्रियों को शीतल पेयजल उपलब्ध कराने व यात्री रेलवे सुरक्षा बल सुमन मैत्रीभाव के दृष्टिगत शीतल पेयजल सेवा मुहिय की शुरुआत की गई। उक्त अभियान के तहत इतवारी स्टेशन, भंडारा रोड स्टेशन, गाँविया स्टेशन, डोंगरगढ़ स्टेशन, राजनांदगांव स्टेशन, नैनपुर स्टेशन, छिंदवाड़ा स्टेशन, नागभीड स्टेशन तथा अन्य महत्वपूर्ण स्टेशनों पर विद्योय कर्माग्रय श्रेणी के यात्रियों एवं जहाँ पर नल से पानी की उपलब्धता में असुविधा हो रही है, उनको जल उपलब्ध कराया गया एवं उन्हें पानी पिलाया जा रहा है। रेलवे

राइट गुरुकुल हा.से. डोंगरगांव इंग्लिश मिडियम का परीक्षा परिणाम घोषित

डोंगरगांव (दावा)। नगर में संचालित राइट गुरुकुल का स्थानीय परीक्षा परिणाम आज पालकों की उपस्थिति में घोषित किया गया। सबसे पहले मां सरस्वती की पूजा अर्चना संस्था के प्राचार्य, शिक्षक शिक्षिकाएँ, एवं प्राध्यापक ने किया। तत्पश्चात कार्यक्रम में उपस्थित समस्त पालकों का तिलक लगाकर स्वागत किया गया। परीक्षा परिणाम की घोषणा सबसे पहले कक्षा नर्सरी में परिधि राणा 98% प्रथम, र्ष साहू 97.5% द्वितीय, दिव्या पटेल एव टीशा मंडवी 94.5% तृतीय। केजी 1 में रोहित मंडवी 99% प्रथम, योगिता साहू एवं मोनिशा पटेल 96% द्वितीय, साहिल मानिकपुरी एवं तमय पटेल 94.50% तृतीय। केजी 2 से ओजस्वी अंबादे एवं सायंशी सिंह 98% प्रथम, धवन सिंह माली, स्वाति साहू एवं माही यादव 96% द्वितीय, फियंशु साहू, वेदंत राणा एवं प्रियांशु चंद्रवंशी 95.20% तृतीय। कक्षा 1 से खैलन भुआर्य 98.8% प्रथम, काव्यांजलि रवत 96% द्वितीय, पूर्वी सिन्हा 94.4% तृतीय। कक्षा 2 से मानसी निषाद एवं पूर्वी देवांन 98.4% प्रथम, श्रद्धा राठिया 98% द्वितीय, भय्य साहू एवं सानेत मंडवी 95.6% तृतीय रहे। कक्षा 3 से रोहन नायक 95% प्रथम, गरिमा चंद्रवंशी एवं कृष्णा साहू 93% द्वितीय, आर्यन कोरे 92% तृतीय। कक्षा 4 से दीपांशु रवत 98% प्रथम, निखिता साहू एवं गुरुंशर रवत 95.66% द्वितीय, चैत्र साहू एवं भूमिका साहू 94.33% तृतीय। कक्षा 5 से लावण्या देबर 97.33% प्रथम, दिक्कल यादव 96.66% द्वितीय, मयंक साहू 95.33% तृतीय। कक्षा 6 से रेणु महोबिया 86.6% प्रथम, हार्दिक जैन 84% द्वितीय, नैतिक चौर एवं दीपांशु साहू 81% तृतीय। कक्षा 7 से खुशी नायक 94.83% प्रथम, आभा देवांन 94.3% द्वितीय, मानवी देवांन 91.5% तृतीय। कक्षा 8 से चंचल रामटेके 93.16% प्रथम, आह्ला खान 84.5% द्वितीय, कक्षा 9 से यासमीन चंद्रवंशी 93.66%

हर की बौखलाहट से घबराए कांग्रेसियों के पीढाताओं का मतदान कारवाया

राजनांदगांव (दावा)। आम चुनाव के द्वितीय चरण में हाल ही में सम्पन्न हुए चुनाव में स्थानीय स्टेशनपारा में बृथ क्रमांक 91 के पीढासीन अधिकारी और भाषणा कार्यकर्ताओं की चुनाव आयोग से शिकायत क्षेत्र के उत्तर ब्लॉक कांग्रेस के अध्यक्ष आसिफ अली के द्वारा की गई थी, जिसे क्षेत्र के पूर्व भाजपा पार्षद एवं दिग्गज नेता देवेश चाटोडे ने भविष्य में होने वाली हार की बौखलाहट के मद्देनजर कांग्रेसी कार्यकर्ताओं द्वारा की गई बचकानी हकत बताया है। श्री चाटोडे ने बताया कि प्रत्येक पोलिंग बृथ के पीढासीन अधिकारी को अपने अधिकार एवं कर्तव्यों की पूर्णरूपेण जानकारी होती है जिसका वो नियमतः पालन करते हैं, और उसी प्रक्रिया के अंतर्गत ही पात्र मतदाताओं का मतदान कारवाया गया है। 'चूँकि उत्तर ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष विधानसभा चुनाव के समय भी अपने क्षेत्र में अपनी पार्टी को लीड नहीं दिलवा पाए थे इसलिए बौखलाहट में ऐसी बचकानी हकत कर बेबुनियाद आरोप लगा रहे हैं।

मंजू खोखरिया बनी अग्रवाल महिला मंडल की अध्यक्ष

राजनांदगांव (दावा)। स्थानीय अग्रवाल समाज की महिला मंडल का मंगलवार दिनांक 30 अप्रैल को संपन्न हुए चुनाव में श्रीमती मंजू दुर्गा खोखरिया विजय हासिल की। अग्रवाल महिला मंडल के द्विवार्षिक कार्यकाल (2024-26) के लिए अग्रसेन भवन में आयोजित चुनाव में श्रीमती मंजू दुर्गा खोखरिया ने सीधी टकर में सुनीता लोहिया को हरा कर अध्यक्ष पद पर विजयी हुईं। उनके अध्यक्ष बनने पर अग्रवाल महिला मंडल की पूर्व अध्यक्ष अनुराधा लोहिया, अग्रवाल सभा के अध्यक्ष संतोष अग्रवाल, नवयुवक मंडल के अध्यक्ष हर्षित अग्रवाल ने बधाई एवं शुभकामनाएं प्रेषित की। नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्रीमती मंजू ने सभी का धन्यवाद करते हुए कहा कि वे सभी का साथ ले अग्रवाल समाज का नाम आगे बढ़ाऊंगी।

कलेक्टर एस. जयवर्धन की अध्यक्षता में जिला स्तरीय पुनर्वास समिति की बैठक

मोहला (दावा)। कलेक्टर एवं जिला दंडाधिकारी एस. जयवर्धन की अध्यक्षता में जिला स्तरीय पुनर्वास समिति की बैठक जिला कार्यालय मोहला मानपुर अंबागढ़ चौकी के सभा कक्ष में आयोजित किया गया। बैठक में मुख्य बिंदु नक्सल पीड़ित व्यक्तियों, परिवारों, आत्मसमर्पित नक्सलियों को समाज की मुख्य धारा में जोड़े जाने के उद्देश्य से सुरक्षा एवं पुनर्वास के लिए तथा नक्सली घटना में मृत व्यक्तियों के परिवारों के सदस्य को शासकीय नौकरी अथवा आर्थिक सहायता प्रदान करने पुनर्वास करने के साथ-साथ पीड़ित परिवार के बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, बेहतर आवास, एवं दैनिक मूलभूत सुविधा उपलब्ध कराये जाने के संबंध में चर्चा किया गया। संबंधित कार्यों के क्रियान्वयन व निराकरण के संबंध में विभागीय अधिकारियों द्वारा शीघ्रतः समीक्षा किया गया। बैठक में जिले के पुनर्वास

समिति द्वारा नक्सल पीड़ितों के आश्रितों एवं उनके परिवार के लोगों के कल्याण के लिए आगे की कार्यवाही राहत राशि एवं उनके पुनर्वास के लिए समिति द्वारा निर्णय लिया गया। बैठक में समिति द्वारा जिले में 4 अप्रैल को ग्राम पीटमेटा निवासी प्रेम सिंह धावड़ा द्वारा की नक्सली घटना में मृत्यु होने पर उनके आश्रित श्रीमती दसाय बाई उम्र 25 को नक्सल पीड़ित राहत एवं पुनर्वास योजना के अंतर्गत आर्थिक सहायता राशि 5 लाख रुपए राहत राशि एवं अन्य सुविधाएं जैसे आवास, स्वास्थ्य बीमा योजना का लाभ एवं यात्री बसों में छूट दिया जाने का पुनर्वास समिति द्वारा निर्णय लिया गया है। बैठक में संयुक्त कलेक्टर श्रीमती प्रेमलता चंदेल, परियोजना निदेशक हेमंत ठाकरे, उप संचालक कृषि जे.एल.मांडवी, जिला शिक्षा अधिकारी फतेलात कोसरिया, सहायक आयुक्त श्रीकांत दुबे उपस्थित थे।

श्रम सम्मान निधि राशि जारी होने से कर्मचारियों को मिलेगी राहत

डोंगरगढ़ (दावा)। छत्तीसगढ़ लघु वेतन शासकीय चतुर्थ वर्ग कर्मचारी संघ के प्रांतीय अध्यक्ष बिदेश्वर राम रैतिया ने हाल ही में शासन स्तर के उच्च अधिकारियों से चर्चा कर कर्मचारियों को दिए जाने वाला श्रम सम्मान निधि राशि का बजट आवंटन करने की मांग चर्चा की थी। जिसके संदर्भ में लोक निर्माण विभाग प्रमुख अभिषेक शर्मा पत्र क्रमांक 2528 50001 दिनांक 19 अप्रैल पत्र जारी कर विभाग के दैनिक वेतन भोगी कर्मचारी जिसमें संगठित क्षेत्र कुशल, अर्थ कुशल, अकुशल एवं अन्य मद में कार्य करने वाले कर्मचारियों के लिए बजट रिलीज किया गया है। श्रम सम्मान निधि में लोक निर्माण विभाग के द्वारा 3 लाख हजार रुपए का बजट प्रावधानित किया गया था। जिसमें अभी तकला 555.78 लाख रुपए का बजट जारी किया गया है। जिसके तहत श्रम सम्मान निधि कर्मचारियों को दी जाएगी। विभाग के द्वारा यह पत्र परियोजना निदेशक एडीबी एवं समस्त अधीक्षण अभियंताओं को जारी किया गया है जारी पत्र में कुल बजट में से मंडल वार राशि जारी कर दी गई

है शीघ्र लोक निर्माण विभाग के कर्मचारियों को श्रम सम्मान निधि प्राप्त होगी। संघ की मांग पर राज्य शासन ने दिया आश्वासन जात हो कि हाल ही में संघ के प्रांतीय महामंत्री योगेश चौर एवं जिला अध्यक्ष हरिश्चंद्र यादव तथा जिला पदाधिकारी के नेतृत्व में आयुक्त अनुसूचित जाति जनजाति एवं अन्य आनुसूचित जाति जनजाति तथा उच्च अधिकारियों से चर्चा कर आदिवासी विकास विभाग में कार्यरत आश्रम छात्रावास शैक्षणिक संस्था एकलव्य आदि संस्थाओं में कार्यरत कर्मचारियों के लिए राज्य शासन द्वारा दिए जाने वाला श्रम सम्मान निधि का बजट रिलीज करने की मांग पर चर्चा किया गया था जिसमें आयुक्त अपर आयुक्त ने अति शीघ्र कर्मचारियों के लिए श्रम सम्मान निधि का बजट जारी करने की आश्वासन दिया है। कर्मचारियों के लिए जिलेवार बजट रिलीज किया जा रहा है जिसमें राजनांदगांव जिले के लिए 1.78 लाख प्रावधानित है कार्यरत दैनिक वेतन भोगी कर्मचारियों को श्रम सम्मान निधि का भुगतान किया जाएगा।

अनमोल दावा

जीत हो या हार दोनों का सम्मान करना सीखें, क्योंकि दोनों में ही ईश्वर की इच्छा होती है।

चुनाव से पहले उम्मीदवारों का आना-जाना, दलों का अनुशासन और जनता के प्रति जिम्मेदारी

राजनीतिक दलों में लोकतांत्रिक वातावरण होना अच्छी बात मानी जाती है, ताकि किसी भी सदस्य को अगर किसी बात पर एतराज हो तो वह उसे जाहिर कर सके। मगर इसका यह अर्थ कदाई नहीं कि कोई पार्टी अपने भीतर अनुशासन बनाना ही बंद कर दे। चलते चुनाव के बीच जिस तरह कांग्रेस के नेता बगावत करते और दूसरे दलों का दामन थामते देखे जा रहे हैं, उसे कांग्रेस बेशक पार्टी का आंतरिक लोकतंत्र बता कर खुद अपनी पीठ थपथपाने की कोशिश करे, पर हकीकत यही है कि इससे उसमें अनुशासन की कमी जाहिर होती है।

कुछ दिनों पहले गुजरात में सूरत सीट से कांग्रेस के उम्मीदवार ने जानबूझ कर अपना पर्चा भरने में गड़बड़ी की, जिसके चलते उसका पर्चा निरस्त हो गया और भाजपा का प्रत्याशी निर्विरोध चुन लिया गया। अब इंदौर सीट से उम्मीदवार ने नामांकन वापस लेने के आखिरी दिन अपनी उम्मीदवारी वापस ले ली। एक दिन पहले दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष पद से अरविंदर सिंह लवली ने यह कहते हुए इस्तीफा दे दिया कि चुनाव प्रभारी उनकी बात नहीं सुनते। लवली ने पार्टी नेतृत्व पर भी कई आरोप लगाए हैं। हालांकि इन तीनों मामलों में भाजपा के दबाव और साठगांठ की बातें भी की जा रही हैं, मगर इससे कांग्रेस की अनुशासनात्मक ढिलाई और अपने नेताओं को संभाल कर रख पाने में नाकामी छिप नहीं जाती।

पिछले कुछ वर्षों में बड़ी संख्या में नेता कांग्रेस छोड़ कर भाजपा में शामिल हो गए। उनमें कई वरिष्ठ नेता भी थे। यह ठीक है कि कई नेताओं को जब कांग्रेस में अपना भविष्य नजर नहीं आया, तो उन्होंने भाजपा का दामन थाम लिया। कुछ के बारे में कहा जाता है कि वे अपने भ्रष्टाचार के खिलाफ कार्रवाई से बचने के लिए सत्तापक्ष की तरफ चले गए। मगर इससे कांग्रेस नेतृत्व पर सवाल तो उठते ही हैं कि वह क्यों अपने नेताओं को संतुष्ट नहीं रख सकी। ऐसा क्या हुआ कि उसके जो नेता कल तक सिद्धांतों की दुहाई देते न थकते थे, वे अचानक विद्रोही और अवसरवादी नजर आने लगे।

उनका असंतोष अचानक फूट पड़ा और वे कांग्रेस के खिलाफ विष-वमन करने लगे। किसी भी पार्टी को ताकत इस बात से मिलती है कि उसके नेता और कार्यकर्ता कितने प्रतिबद्ध हैं। उन्हें कोई जिम्मेदारी मिलती है या नहीं मिलती, उन्हें चुनाव का टिकट मिलता है या नहीं मिलता, वे चुप रह कर पार्टी नेतृत्व का फैसला स्वीकार कर लेते और अपने प्रत्याशी को जिताने के लिए निष्ठा और एकजुटता का परिचय देते हैं। भाजपा इसीलिए इस वक्त सबसे ताकतवर पार्टी है कि उसका नेतृत्व अपने नेताओं और कार्यकर्ताओं को अपने साथ जोड़ कर रखने में कामयाब है।

चुनाव जीतने के लिए हर राजनीतिक दल अपने पैतरे आजमाता ही है। जैसे कि आरोप लग रहे हैं, अगर भाजपा कांग्रेसी नेताओं को अपने पाले में खींचने में कामयाब हो रही है, तो इसे चुनावी गणित के हिसाब से गलत नहीं कहा जा सकता। असल सवाल है कि कांग्रेस ने अपने नेताओं को इस तरह अनुशासित क्यों नहीं रखा या उनमें ऐसा भरोसा क्यों नहीं भर सकी कि वे दूसरे किसी दल के प्रलोभन या दबाव में आ ही न पाएं। बीच चुनाव में इस तरह पार्टी का साथ छोड़ कर बड़े नेताओं, यहां तक कि उम्मीदवारों के दूसरे दल में शामिल होने से न केवल पार्टी की आंतरिक कमजोरी जाहिर होती है, बल्कि उसकी रणनीति भी विफल होती है।

धरा पर विश्वकर्मा के अवतार मजदूर



विजय मिश्रा "अमित"

सृष्टि के आरंभ से ही मजदूर वर्ग का जन्म हुआ। मानव समाज का यह एक ऐसा वर्ग है जो आजीवन दूसरों का बोझ अपने सिर पर लेकर चलता है। कम दाम पर अधिक काम बड़े आराम से कर देता है। खुद के सिर पर छत नहीं होता, हाथ पांव में फफोले होते हैं पर दूसरों की आलीशान कोठी बनाने में कोताही नहीं करता। इसी लिए तपती धूप, कड़कती ठंड और भीषण बारिश भी मजदूर की मेहनत को झुककर सलाम करते हैं। मजदूर की बलशाली भुजाओं को देखकर कठोर चट्टान, ऊंचे पर्वत कांपते हैं।

ऐसे बाहुबली मजदूरों का अपने साथ-साथ अपने परिवारजनों के जीवन यापन, रोजी रोटी हेतु दूसरों का बोझ उठाना अगर मजबूरी है तो मजदूर को ताकत के दम पर ही गंतव्य तक पहुंचाना, नव निर्माण कार्य को पूरा करना समाज के अन्य वर्गों की भी मजबूरी है। अत्याधुनिक मशीनों के आविष्कार ने आज के युग को जेट युग बना दिया है। तेज रफतार ही तेज प्रगति की पर्याय बनती जा रही है। ऐसे दौर में भी मजदूरों की अहमियत बरकरार है। उनका स्थान पूरी तरह से मशीन नहीं ले सकी है। तालपंथ यही है कि धरा पर "भगवान विश्वकर्मा" की भांति मजदूरों की अहमियत मानव समाज में सदैव बनी रहेगी।

गांव शहर की चहल पहल, कल कारखानों की कल-कल-कल-कल को चलायमान रखने वाले मजदूरों ने सर्वप्रथम अमेरिका में 1 मई 1886 को अपने हक की लड़ाई लड़ी और एक दिन में आठ घंटे कार्य की समय सीमा को निर्धारित करने में कामयाबी पाई, यद्यपि इस आन्दोलन में मजदूरों की मौत भी हुई। आज भारत सहित अन्य देशों में भी

कार्य समयावधि आठ घंटे मान्य है। इसी आंदोलन के बाद से एक मई को अंतरराष्ट्रीय मजदूर दिवस मनाने की आधारशिला रखी गई। भारत में 1 मई 1923 से मजदूर दिवस मनाने की शुरुआत चेन्नई से हुई थी।

अंतरराष्ट्रीय मजदूर दिवस कड़ी मेहनत से उपजी उन्नति से प्रेरणा लेकर आगे और बेहतर करने हेतु संकल्प लेने का दिवस होता है। मजदूरों के जीवन में जश्न के साथ नव ऊर्जा को संचारित करने का दिवस होता है। मजदूरों को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक बनाने का दिवस होता है। शोषणकर्ताओं के विरुद्ध साझा संघर्ष के लिए एक जुट होने का दिवस होता है। मजदूरों को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक बनाने का दिवस होता है। शोषणकर्ताओं के विरुद्ध साझा संघर्ष के लिए एक जुट होने का दिवस होता है।

यदि मजदूरों को मजदूरों का शोषण, मजदूरों के साथ अन्याय करना स्वयं को कमजोर बनाने जैसा कृत्य सिद्ध होगा। अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाने वाले मजदूरों की ताकत को नजर अंदज करना उच्छे गिरने की स्थिति में ला खड़ा करेगा। दुनिया के ज्यादातर मजदूर निरक्षर और अनपढ़ होते हैं। यही



आज मजदूर दिवस पर विशेष

सिखाता है, अतः मजदूरों के अधिकारों की सुरक्षा, उनके प्रति सहानुभूति रखना मालिकों के लिए भी हितकर है। मजदूर दिवस पर यह भी स्मरणीय है कि मजदूर की गाड़ी कमाई की पवित्रता ही उसे उबड़ खाबड़ जमीन पर मोटी नींद सुला देती है। ऐसे ही परिश्रम और पसीने की महता को उजागर करते हुए जैन मुनि श्री तरुण सागर जी कहते हैं कि- बिना पसीना बहाये जो धन दौलत हासिल होता है, वह पाप की कमाई के समतुल्य है। पाप की कमाई से सोना धारा जड़ित कंगन तो पहन सकते हैं, पर यह भी संभव है कि पाप की कमाई के कारण लोहे की हथकड़ियां भी पहननी पड़ जाएं।

प्रायः यह भी देखने सुनने में आता है कि मालिक बने धनाढ्य लोग समान काम के लिए समान मजदूरी नहीं देते। मजदूरों को समय पर मजदूरी नहीं देते, या आधी अधूरी मजदूरी ही देते हैं। ऐसे कुटिल चाल, कुत्सित विचारों के पीछे मालिकों की सोच मजदूरों को बंधुवा बनाकर रखने की होती है, जो कि हर दुष्क्रांण से मानवीय धर्म के विरुद्ध है। अनुचित है।

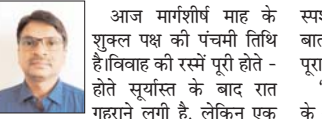
वजह है सुरक्षा के प्रति सजगता और अधिकारों के प्रति जागरूकता की कमी भी मजदूरों में दिखाई देती है, पर ज्ञानी ध्यानी पूंजीपति मालिकों को अनपढ़ मजदूर ही पसीना बहाना, पसीना बहाकर रोजी-रोटी रुपया पैसा कमाना सिखाता है, अतः मजदूरों के अधिकारों की सुरक्षा, उनके प्रति सहानुभूति रखना मालिकों के लिए भी हितकर है।

मजदूरों से काम लेने वालों को हमेशा ध्यान रखना चाहिए कि मजदूर के पसीने के बिना प्राप्ति की कल्पना नहीं की जा सकती। ऐसे श्रमवीरों-कर्मवीरों को सटीक परिभाषित करती हैं ए पंक्तियां - मजदूर अशक नहीं सशक है, श्रम के पुजारी श्रम के भक्त हैं। मजदूर मजबूर नहीं मजबूत है, विकास की नींव विकास के सबूत हैं। पूर्व अति महाप्रबंधक (जन) एम 8 सेक्टर 2 अग्रह कालोनी, पोशा-सुंदर नगर रायपुर (छ.ग.) 492013 मोबाइल 989 31233 10

विचार सरिता

मन में बसे हैं राम 135 श्री राम - सीता विवाह के मंगल अवसर पर शुभ संकल्प व सिंदूर दान

डॉ. योगेंद्र कुमार पांडेय



आज मार्गशीर्ष माह के शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि है। विवाह की रस्में पूरी होते - होते सूर्यास्त के बाद रात गहराने लगी है, लेकिन एक ओर जहां अंबर में अंसख तारे छिटे हुए हैं, वहीं महाराज जनक की पुत्री का यह विवाह स्थल भी अगणित प्रकार पुंजों से जगमगा रहा है। इस विवाह स्थल से लेकर जनकपुरी के चरों में, मागों में और संपूर्ण मिथिला राज्य में अंसख दीप आलोकित हैं। ये सभी मिलकर आकाश के चंद्रमा और चमकते तारों की चमक को फीकी कर रहे हैं।

ध्रुव तारे की ओर इंगित करते हुए श्री राम ने सीता जी से कहा, "सीते! ध्रुवमदीक्ष्वर। इस ध्रुव तारे को देखो। इसकी तरह तुम्हारी और मेरी यह युगल जोड़ी जन्म जन्मांतर और कल्पांत तक अटल है।" रोमांचित होती हुई सीता जी ने कहा, "अवश्य स्वामी! आपको पति रूप में पाकर मेरा सौभाग्य स्वयं ही अटल हो गया है।"

इसके बाद श्री राम ने सीता जी के दाहिने कंधे से अपना हाथ ले जाकर उनके हृदय का स्पर्श किया। उन्होंने कहा, "तुम्हारे हृदय की बात को समझना और उसे संकल्प मानकर पूरा करना मेरा कर्तव्य रहेगा सीते!" "धन्यवाद स्वामी! मेरा चित्त आपके चित्त के अनुकूल होगा और मैं आपकी अनुगामिनी बनूंगी।"

इसके बाद सीता जी ने श्री राम से कहा, "यदि आप मेरे साथ तीर्थ, व्रत, दान, यज्ञ, उद्यापन आदि करें तो मैं आपके वाम अंग में आ जाऊंगी।" इसी तरह सीता जी ने श्री राम से सात वचन मांगे। मुस्कुराते हुए श्री राम ने सीता जी से कहा, "अवश्य सीते! तुम अपने धर्म का सदैव पालन करोगी। अतः तुम मेरे वाम अंग में आ सकती हो।" माता सीता, श्री राम की बाईं ओर आकर बैठीं। इसके बाद श्री राम ने अपनी अनामिका अंगुष्ठ से सीता जी की मांग में सिंदूर भरा और माता सुनयना तथा अन्य स्त्रियों ने अखंड सौभाग्यवती भव कहकर सीता जी को आशीर्वाद दिया। उपस्थित लोगों ने श्री राम और सीता जी का अभिषेक किया। पूजा की अन्य विधियों को पूर्ण करने के बाद मुख्य पुरोहित को दक्षिणा और अन्य ब्राह्मणों को भूयसी दक्षिणा दी गई।

श्री राम और सीता जी के विवाह की ही तरह भरत जी और मांडवी जी का, लक्ष्मण जी और उर्मिला जी का तथा शत्रुघ्न जी और शरत्कीर्ति जी का विवाह संपन्न हुआ। महाराज जनक और महाराज कुशध्वज तथा रानियों की आंखों में प्रसन्नता के आंसू हैं। महाराज दशरथ भाव विभोर हैं, लेकिन वे अपने हृदय में महाराज जनक की पुत्री के विवाह के बाद उसकी विदाई की भावी पीड़ा भी समझ रहे हैं। (भगवान श्री विष्णु के मनुज अवतार भगवान श्री राम और माता सीता की कथा हजारों वर्षों से भारतीय जनमानस में प्रचलित है। संस्कृत में आदिकवि वाल्मीकि और हिंदी साहित्य में अवधी के महाकवि तुलसी से लेकर विश्व की अनेक भाषाओं में अब तक सैकड़ों रामायण लिखी गई हैं। लेखक ने इस रचना में श्री राम की महागाथा के विविध प्रसंगों से कथा प्रवाह की प्रेरणा प्राप्त की है। उन्होंने उन रचनाकारों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए एक साधारण भक्त की अपनी कल्पनादृष्टि से रामकथा की मौलिक साहित्यिक प्रस्तुति का प्रयत्न किया है।)

शब्द सामर्थ्य -043

शब्द सामर्थ्य -043 (भाषावत शब्द)
शब्दों के अर्थ बताएं:
1. जीत, फतेह 2. रायज सम्मान 3. अविनाश 4. अविनाश 5. अविनाश 6. अविनाश 7. अविनाश 8. अविनाश 9. अविनाश 10. अविनाश 11. अविनाश 12. अविनाश 13. अविनाश 14. अविनाश 15. अविनाश 16. अविनाश 17. अविनाश 18. अविनाश 19. अविनाश 20. अविनाश 21. अविनाश 22. अविनाश 23. अविनाश 24. अविनाश 25. अविनाश 26. अविनाश 27. अविनाश 28. अविनाश 29. अविनाश 30. अविनाश 31. अविनाश 32. अविनाश 33. अविनाश 34. अविनाश 35. अविनाश 36. अविनाश 37. अविनाश 38. अविनाश 39. अविनाश 40. अविनाश 41. अविनाश 42. अविनाश 43. अविनाश 44. अविनाश 45. अविनाश 46. अविनाश 47. अविनाश 48. अविनाश 49. अविनाश 50. अविनाश 51. अविनाश 52. अविनाश 53. अविनाश 54. अविनाश 55. अविनाश 56. अविनाश 57. अविनाश 58. अविनाश 59. अविनाश 60. अविनाश 61. अविनाश 62. अविनाश 63. अविनाश 64. अविनाश 65. अविनाश 66. अविनाश 67. अविनाश 68. अविनाश 69. अविनाश 70. अविनाश 71. अविनाश 72. अविनाश 73. अविनाश 74. अविनाश 75. अविनाश 76. अविनाश 77. अविनाश 78. अविनाश 79. अविनाश 80. अविनाश 81. अविनाश 82. अविनाश 83. अविनाश 84. अविनाश 85. अविनाश 86. अविनाश 87. अविनाश 88. अविनाश 89. अविनाश 90. अविनाश 91. अविनाश 92. अविनाश 93. अविनाश 94. अविनाश 95. अविनाश 96. अविनाश 97. अविनाश 98. अविनाश 99. अविनाश 100. अविनाश 101. अविनाश 102. अविनाश 103. अविनाश 104. अविनाश 105. अविनाश 106. अविनाश 107. अविनाश 108. अविनाश 109. अविनाश 110. अविनाश 111. अविनाश 112. अविनाश 113. अविनाश 114. अविनाश 115. अविनाश 116. अविनाश 117. अविनाश 118. अविनाश 119. अविनाश 120. अविनाश 121. अविनाश 122. अविनाश 123. अविनाश 124. अविनाश 125. अविनाश 126. अविनाश 127. अविनाश 128. अविनाश 129. अविनाश 130. अविनाश 131. अविनाश 132. अविनाश 133. अविनाश 134. अविनाश 135. अविनाश 136. अविनाश 137. अविनाश 138. अविनाश 139. अविनाश 140. अविनाश 141. अविनाश 142. अविनाश 143. अविनाश 144. अविनाश 145. अविनाश 146. अविनाश 147. अविनाश 148. अविनाश 149. अविनाश 150. अविनाश 151. अविनाश 152. अविनाश 153. अविनाश 154. अविनाश 155. अविनाश 156. अविनाश 157. अविनाश 158. अविनाश 159. अविनाश 160. अविनाश 161. अविनाश 162. अविनाश 163. अविनाश 164. अविनाश 165. अविनाश 166. अविनाश 167. अविनाश 168. अविनाश 169. अविनाश 170. अविनाश 171. अविनाश 172. अविनाश 173. अविनाश 174. अविनाश 175. अविनाश 176. अविनाश 177. अविनाश 178. अविनाश 179. अविनाश 180. अविनाश 181. अविनाश 182. अविनाश 183. अविनाश 184. अविनाश 185. अविनाश 186. अविनाश 187. अविनाश 188. अविनाश 189. अविनाश 190. अविनाश 191. अविनाश 192. अविनाश 193. अविनाश 194. अविनाश 195. अविनाश 196. अविनाश 197. अविनाश 198. अविनाश 199. अविनाश 200. अविनाश 201. अविनाश 202. अविनाश 203. अविनाश 204. अविनाश 205. अविनाश 206. अविनाश 207. अविनाश 208. अविनाश 209. अविनाश 210. अविनाश 211. अविनाश 212. अविनाश 213. अविनाश 214. अविनाश 215. अविनाश 216. अविनाश 217. अविनाश 218. अविनाश 219. अविनाश 220. अविनाश 221. अविनाश 222. अविनाश 223. अविनाश 224. अविनाश 225. अविनाश 226. अविनाश 227. अविनाश 228. अविनाश 229. अविनाश 230. अविनाश 231. अविनाश 232. अविनाश 233. अविनाश 234. अविनाश 235. अविनाश 236. अविनाश 237. अविनाश 238. अविनाश 239. अविनाश 240. अविनाश 241. अविनाश 242. अविनाश 243. अविनाश 244. अविनाश 245. अविनाश 246. अविनाश 247. अविनाश 248. अविनाश 249. अविनाश 250. अविनाश 251. अविनाश 252. अविनाश 253. अविनाश 254. अविनाश 255. अविनाश 256. अविनाश 257. अविनाश 258. अविनाश 259. अविनाश 260. अविनाश 261. अविनाश 262. अविनाश 263. अविनाश 264. अविनाश 265. अविनाश 266. अविनाश 267. अविनाश 268. अविनाश 269. अविनाश 270. अविनाश 271. अविनाश 272. अविनाश 273. अविनाश 274. अविनाश 275. अविनाश 276. अविनाश 277. अविनाश 278. अविनाश 279. अविनाश 280. अविनाश 281. अविनाश 282. अविनाश 283. अविनाश 284. अविनाश 285. अविनाश 286. अविनाश 287. अविनाश 288. अविनाश 289. अविनाश 290. अविनाश 291. अविनाश 292. अविनाश 293. अविनाश 294. अविनाश 295. अविनाश 296. अविनाश 297. अविनाश 298. अविनाश 299. अविनाश 300. अविनाश 301. अविनाश 302. अविनाश 303. अविनाश 304. अविनाश 305. अविनाश 306. अविनाश 307. अविनाश 308. अविनाश 309. अविनाश 310. अविनाश 311. अविनाश 312. अविनाश 313. अविनाश 314. अविनाश 315. अविनाश 316. अविनाश 317. अविनाश 318. अविनाश 319. अविनाश 320. अविनाश 321. अविनाश 322. अविनाश 323. अविनाश 324. अविनाश 325. अविनाश 326. अविनाश 327. अविनाश 328. अविनाश 329. अविनाश 330. अविनाश 331. अविनाश 332. अविनाश 333. अविनाश 334. अविनाश 335. अविनाश 336. अविनाश 337. अविनाश 338. अविनाश 339. अविनाश 340. अविनाश 341. अविनाश 342. अविनाश 343. अविनाश 344. अविनाश 345. अविनाश 346. अविनाश 347. अविनाश 348. अविनाश 349. अविनाश 350. अविनाश 351. अविनाश 352. अविनाश 353. अविनाश 354. अविनाश 355. अविनाश 356. अविनाश 357. अविनाश 358. अविनाश 359. अविनाश 360. अविनाश 361. अविनाश 362. अविनाश 363. अविनाश 364. अविनाश 365. अविनाश 366. अविनाश 367. अविनाश 368. अविनाश 369. अविनाश 370. अविनाश 371. अविनाश 372. अविनाश 373. अविनाश 374. अविनाश 375. अविनाश 376. अविनाश 377. अविनाश 378. अविनाश 379. अविनाश 380. अविनाश 381. अविनाश 382. अविनाश 383. अविनाश 384. अविनाश 385. अविनाश 386. अविनाश 387. अविनाश 388. अविनाश 389. अविनाश 390. अविनाश 391. अविनाश 392. अविनाश 393. अविनाश 394. अविनाश 395. अविनाश 396. अविनाश 397. अविनाश 398. अविनाश 399. अविनाश 400. अविनाश 401. अविनाश 402. अविनाश 403. अविनाश 404. अविनाश 405. अविनाश 406. अविनाश 407. अविनाश 408. अविनाश 409. अविनाश 410. अविनाश 411. अविनाश 412. अविनाश 413. अविनाश 414. अविनाश 415. अविनाश 416. अविनाश 417. अविनाश 418. अविनाश 419. अविनाश 420. अविनाश 421. अविनाश 422. अविनाश 423. अविनाश 424. अविनाश 425. अविनाश 426. अविनाश 427. अविनाश 428. अविनाश 429. अविनाश 430. अविनाश 431. अविनाश 432. अविनाश 433. अविनाश 434. अविनाश 435. अविनाश 436. अविनाश 437. अविनाश 438. अविनाश 439. अविनाश 440. अविनाश 441. अविनाश 442. अविनाश 443. अविनाश 444. अविनाश 445. अविनाश 446. अविनाश 447. अविनाश 448. अविनाश 449. अविनाश 450. अविनाश 451. अविनाश 452. अविनाश 453. अविनाश 454. अविनाश 455. अविनाश 456. अविनाश 457. अविनाश 458. अविनाश 459. अविनाश 460. अविनाश 461. अविनाश 462. अविनाश 463. अविनाश 464. अविनाश 465. अविनाश 466. अविनाश 467. अविनाश 468. अविनाश 469. अविनाश 470. अविनाश 471. अविनाश 472. अविनाश 473. अविनाश 474. अविनाश 475. अविनाश 476. अविनाश 477. अविनाश 478. अविनाश 479. अविनाश 480. अविनाश 481. अविनाश 482. अविनाश 483. अविनाश 484. अविनाश 485. अविनाश 486. अविनाश 487. अविनाश 488. अविनाश 489. अविनाश 490. अविनाश 491. अविनाश 492. अविनाश 493. अविनाश 494. अविनाश 495. अविनाश 496. अविनाश 497. अविनाश 498. अविनाश 499. अविनाश 500. अविनाश 501. अविनाश 502. अविनाश 503. अविनाश 504. अविनाश 505. अविनाश 506. अविनाश 507. अविनाश 508. अविनाश 509. अविनाश 510. अविनाश 511. अविनाश 512. अविनाश 513. अविनाश 514. अविनाश 515. अविनाश 516. अविनाश 517. अविनाश 518. अविनाश 519. अविनाश 520. अविनाश 521. अविनाश 522. अविनाश 523. अविनाश 524. अविनाश 525. अविनाश 526. अविनाश 527. अविनाश 528. अविनाश 529. अविनाश 530. अविनाश 531. अविनाश 532. अविनाश 533. अविनाश 534. अविनाश 535. अविनाश 536. अविनाश 537. अविनाश 538. अविनाश 539. अविनाश 540. अविनाश 541. अविनाश 542. अविनाश 543. अविनाश 544. अविनाश 545. अविनाश 546. अविनाश 547. अविनाश 548. अविनाश 549. अविनाश 550. अविनाश 551. अविनाश 552. अविनाश 553. अविनाश 554. अविनाश 555. अविनाश 556. अविनाश 557. अविनाश 558. अविनाश 559. अविनाश 560. अविनाश 561. अविनाश 562. अविनाश 563. अविनाश 564. अविनाश 565. अविनाश 566. अविनाश 567. अविनाश 568. अविनाश 569. अविनाश 570. अविनाश 571. अविनाश 572. अविनाश 573. अविनाश 574. अविनाश 575. अविनाश 576. अविनाश 577. अविनाश 578. अविनाश 579. अविनाश 580. अविनाश 581. अविनाश 582. अविनाश 583. अविनाश 584. अविनाश 585. अविनाश 586. अविनाश 587. अविनाश 588. अविनाश 589. अविनाश 590. अविनाश 591. अविनाश 592. अविनाश 593. अविनाश 594. अविनाश 595. अविनाश 596. अविनाश 597. अविनाश 598. अविनाश 599. अविनाश 600. अविनाश 601. अविनाश 602. अविनाश 603. अविनाश 604. अविनाश 605. अविनाश 606. अविनाश 607. अविनाश 608. अविनाश 609. अविनाश 610. अविनाश 611. अविनाश 612. अविनाश 613. अविनाश 614. अविनाश 615. अविनाश 616. अविनाश 617. अविनाश 618. अविनाश 619. अविनाश 620. अविनाश 621. अविनाश 622. अविनाश 623. अविनाश 624. अविनाश 625. अविनाश 626. अविनाश 627. अविनाश 628. अविनाश 629. अविनाश 630. अविनाश 631. अविनाश 632. अविनाश 633. अविनाश 634. अविनाश 635. अविनाश 636. अविनाश 637. अविनाश 638. अविनाश 639. अविनाश 640. अविनाश 641. अविनाश 642. अविनाश 643. अविनाश 644. अविनाश 645. अविनाश 646. अविनाश 647. अविनाश 648. अविनाश 649. अविनाश 650. अविनाश 651. अविनाश 652. अविनाश 653. अविनाश 654. अविनाश 655. अविनाश 656. अविनाश 657. अविनाश 658. अविनाश 659. अविनाश 660. अविनाश 661. अविनाश 662. अविनाश 663. अविनाश 664. अविनाश 665. अविनाश 666. अविनाश 667. अविनाश 668. अविनाश 669. अविनाश 670. अविनाश 671. अविनाश 672. अविनाश 673. अविनाश 674. अविनाश 675. अविनाश 676. अविनाश 677. अविनाश 678. अविनाश 679. अविनाश 680. अविनाश 681. अविनाश 682. अविनाश 683. अविनाश 684. अविनाश 685. अविनाश 686. अविनाश 687. अविनाश 688. अविनाश 689. अविनाश 690. अविनाश 691. अविनाश 692. अविनाश 693. अविनाश 694. अविनाश 695. अविनाश 696. अविनाश 697. अविनाश 698. अविनाश 699. अविनाश 700. अविनाश 701. अविनाश 702. अविनाश 703. अविनाश 704. अविनाश 705. अविनाश 706. अविनाश 707. अविनाश 708. अविनाश 709. अविनाश 710. अविनाश 711. अविनाश 712. अविनाश 713. अविनाश 714. अविनाश 715. अविनाश 716. अविनाश 717. अविनाश 718. अविनाश 719. अविनाश 720. अविनाश 721. अविनाश 722. अविनाश 723. अविनाश 724. अविनाश 725. अविनाश 726. अविनाश 727. अविनाश 728. अविनाश 729. अविनाश 730. अविनाश 731. अविनाश 732. अविनाश 733. अविनाश 734. अविनाश 735. अविनाश 736. अविनाश 737. अविनाश 738. अविनाश 739. अविनाश 740. अविनाश 741. अविनाश 742. अविनाश 743. अविनाश 744. अविनाश 745. अविनाश 746. अविनाश 747. अविनाश 748. अविनाश 749. अविनाश 750. अविनाश 751. अविनाश 752. अविनाश 753. अविनाश 754. अविनाश 755. अविनाश 756. अविनाश 757. अविनाश 758. अविनाश 759. अविनाश 760. अविनाश 761. अविनाश 762. अविनाश 763. अविनाश 764. अविनाश 765. अविनाश 766. अविनाश 767. अविनाश 768. अविनाश 769. अविनाश 770. अविनाश 771. अविनाश 772. अविनाश 773. अविनाश 774. अविनाश 775. अविनाश 776. अविनाश 777. अविनाश 778. अविनाश 779. अविनाश 780. अविनाश 781. अविनाश 782. अविनाश 783. अविनाश 784. अविनाश 785. अविनाश 786. अविनाश 787. अविनाश 788. अविनाश 789. अविनाश 790. अविनाश 791. अविनाश 792. अविनाश 793. अविनाश 794. अविनाश 795. अविनाश 796. अविनाश 797. अविनाश 798. अविनाश 799. अविनाश 800. अविनाश 801. अविनाश 802. अविना

खैरागढ़ नगर पालिका के अध्यक्ष पद से शैलेन्द्र वर्मा की विदाई लगभग तय

खैरागढ़ (दावा)। नगर पालिका में अध्यक्ष पद पर शैलेन्द्र वर्मा के बने रहने को लेकर समस्या खत्म होने का नाम नहीं ले रही। मामले में पहले त्यागपत्र फिर पालिका के सीएमओ पर लेटर पैड के दुरुपयोग का आरोप लगाकर त्यागपत्र देने से इंकार करने के बाद और फिर अध्यक्ष पद पर बने रहने हाईकोर्ट का दखला खटखटाने के बाद भी अध्यक्ष शैलेन्द्र वर्मा की अध्यक्ष पद से विदाई लगभग तय मानी जा रही है। हालांकि उनके द्वारा सुप्रीम कोर्ट की गाइडलाइन के हिसाब से आगे कारवाई की बात कही जा रही है, लेकिन अब हाईकोर्ट में याचिका पहले सिंगल फिर डबल बेंच में खारिज होने के बाद अध्यक्ष पद में बने रहने शैलेन्द्र वर्मा को राहत मिल पाना विधि के जानकारों के मुताबिक कठिन लग रहा है। दूसरी ओर अब गैर नगरीय प्रशासन विभाग के पाले में आ गई है, पुलिस ने भी सीएमओ के खिलाफ हस्ताक्षरकृत लेटर पैड में फर्जी तरीके से इस्तीफा टाढ़ा करने वाले शिकायत आवेदन पर भी लगभग जांच पूरी कर ली है, जिसमें संभावना है कि संबंधितों के बयान और परीक्षण बाद तैयार जॉब प्रविष्टिद्वारा शैलेन्द्र वर्मा द्वारा खुद इस्तीफा देने की पुष्टि हो चुकी है और जल्द ही इस पर निर्णय आ

हाईकोर्ट में याचिका खारिज होने के बाद शैलेन्द्र की तय मानी जा रही रवानगी



सकता है।

मियाद पूरी होने के पहले दुबारा याचिका लगाने पर हाईकोर्ट ने शैलेन्द्र पर लगाया था जुर्माना

फरवरी महीने की सत्रह तारीख को नया अध्यक्ष शैलेन्द्र वर्मा द्वारा पहले सीएमओ, उसके बाद नगरीय प्रशासन विभाग के अवर सचिव को 13 फरवरी को इस्तीफा नामे की जानकारी सार्वजनिक हुई, जिसके बाद हड़बड़ाए कार्रसियों ने 18 फरवरी को थाने में आवेदन

देकर सीएमओ प्रमोद शुक्ला पर अध्यक्ष के हस्ताक्षरकृत लेटर पैड में इस्तीफा टाढ़ा करने और नगरीय प्रशासन विभाग को प्रेषित करने का आरोप लगाते हुए, एफआईआर दर्ज करने की मांग की वही दो दिन बाद नगरीय प्रशासन विभाग में पत्र लिखकर इस्तीफे को फर्जी बताते हुए, अस्वीकार करने की मांग की थी। इस बीच रहत की उम्मीद में शैलेन्द्र वर्मा ने हाईकोर्ट का दखला खटखटाया और पद पर बने रहने देने की मांग की जिस पर कोर्ट ने नगरीय प्रशासन विभाग को एक महीने के भीतर प्रकरण में वाजिब निर्णय लेने कहा था। निर्धारित मियाद पूरी होने के दौरान ही शैलेन्द्र वर्मा ने दुबारा हाईकोर्ट में इस मामले को लेकर याचिका दायर कर दी जिससे नाराज कोर्ट ने दस हजार का जुर्माना भी उन पर ठेका और 24 अप्रैल तक नगरीय प्रशासन विभाग को प्रकरण से संबंधित सारी जानकारी देने कहा। सिंगल बेंच के बाद डबल बेंच ने भी मामले को खारिज कर कारवाई यथावत रखने कहा है। इसके अलावा प्रकरण में थाने व जिला प्रशासन की जांच भी लगभग पूरी होने की जानकारी मिल रही है। इस स्थिति में शैलेन्द्र वर्मा का अध्यक्ष पद से जाना लगभग तय माना जा रहा है।

सरस्वती शिशु/उच्चतर माध्यमिक विद्यालय का परीक्षा परिणाम घोषित



खैरागढ़ (दावा)। सरस्वती शिशु/उच्चतर माध्यमिक विद्यालय का वार्षिक परीक्षा परिणाम मंगलवार 30 अप्रैल को घोषित किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय की प्रथम महिला कुल सचिव प्रोफेसर डॉ. नीता सिंह गहरवार एवं विद्यालय के अध्यक्ष मनोज गिंडिया, प्रधानाचार्य सुशी राजलक्ष्मी दीदी एवं प्राचार्य गायत्री चौहान एवं विद्यालय के समस्त आचार्य गण तथा विद्यालय के भैया बहनों के अभिभावक गण उपस्थित थे। कक्षा में आए प्रथम द्वितीय तृतीय बच्चों को पुरस्कृत किया गया, एवं मुख्य अतिथि नीता सिंह गहरवार, कुलसचिव इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय के द्वारा बच्चों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की गई।

सी.जी.पब्लिक स्कूल का वार्षिक परीक्षा परिणाम शत-प्रतिशत



डोंगरगांव (दावा)। स्थानीय सी.जी.पब्लिक हायर सेकेण्डरी स्कूल के हिन्दी तथा अंग्रेजी माध्यम के स्थानीय परीक्षाओं के वार्षिक परीक्षाओं के परिणाम 30 अप्रैल को घोषित किये गए, जिसमें सभी छात्र छात्राओं ने शत प्रतिशत सफलता प्राप्त की। संस्था प्रमुख, अभिभावक, शिक्षकों तथा छात्र-छात्राओं की उपस्थिति में परीक्षा परिणाम घोषित किया गया, संस्था के प्राचार्य एजाज अली हारामी एवं अतिथियों ने समस्त कक्षाओं के प्रथम एवं द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले सभी बच्चों को मेडल एवं प्रशस्ति पत्रक से सम्मानित किया। कक्षाप्रमुख प्रथम एवं द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों में हिन्दी माध्यम-कक्षा-के.जी.वन में आकाश बिंद एवं तेजिशा कुम्वार प्रथम, अंश कुशवाह द्वितीय, कक्षा-के.जी.टू में मो.जिशन बेग प्रथम, कु.देवशी यादव द्वितीय, कक्षा-पहली से कु.गीतांजली साहू प्रथम, आशीष बिंद एवं कु.गौरवी कंडा द्वितीय, कक्षा-दूसरी से कु.गोपी व कु.गीतिका प्रथम, कु.सेलिना कंव्वर द्वितीय, कक्षा-तीसरी से खनिका कंडा प्रथम, कु.लक्षिता चक्रधारी द्वितीय, कक्षा-4थी से समीर कोठारी प्रथम, पिपुया शेण्डे द्वितीय, कक्षा-5वीं से योगेंद्र कुमार प्रथम, कु.नम्रता व प्रियांशु द्वितीय, कक्षा-6वीं से कु.तोषिका बघेल प्रथम, छत्रेश कुमार द्वितीय, कक्षा-7वीं से कु.हिमांशी पंचारी प्रथम, कु.खुशबू साहू द्वितीय, कक्षा-8वीं से भलेश्वर सोनकर प्रथम, कु.भारती साहू व कु.प्राची लाडेश्वर द्वितीय, कक्षा-9वीं से कु.रानी साहू प्रथम, छिकेश कुमार डहरे द्वितीय स्थान पर रहे। इसी प्रकार हायर सेकेण्डरी कक्षा-11वीं गणित संकाय से रोशन लाल सिन्हा प्रथम 98.4, गौरव साहू द्वितीय 63.6, जीवविज्ञान संकाय से कु.तुषा देवांगन प्रथम 96.6, कु.मोनिक्का मधेल द्वितीय 95.2, कॉमर्स संकाय से गौरव कुमार पटेल प्रथम 89.6, कु.भावना हल्बा द्वितीय 84.4 अंक प्राप्त किये। अंग्रेजी माध्यम की कक्षाओं में क्लास-नर्सरी से कु.यूकी प्रथम, चौबेश कुम्वार द्वितीय, क्लास-एल.के.जी. से कु.प्रेणल हिस्वानी प्रथम, कु.दुर्गा साहू, क्लास-यू.के.जी. से वैभव कुमार प्रथम, नुरानत जुरेशिया द्वितीय, क्लास-1 से कु.स्मिता श्यामकर प्रथम, कु.हेजल भंडारी व कु.मन्तशा द्वितीय, क्लास-2 से कु.चैन्सी सोनकर प्रथम, कु.शिफा कुंशी द्वितीय, क्लास-3 से दिव्यांशु सोनकर प्रथम, कु.भूमिका तिवारी द्वितीय, क्लास-4 से कु.सोम्या साहू प्रथम, कु.सिद्धि सिंह द्वितीय, क्लास-5 आयुश टांडेकर व कु.कुमकुम गुप्ता प्रथम, कु.पूर्वी साहू, क्लास-6 से धर्मेन्द्र साहू प्रथम, कु.साक्षी माटेकर द्वितीय, क्लास-7 से विकास कुमार साहू प्रथम, फैय्याज अली हारामी द्वितीय, क्लास-8 से कु.तोशाली साहू प्रथम, कु.वैशाखी निषाद द्वितीय, क्लास-9 से टिकेशदीप टांडेकर प्रथम, कु.यूकी माटेकर द्वितीय रहे। इसी प्रकार हायर सेकेण्डरी क्लास-11 गणित संकाय से कु.रूपाली देवांगन प्रथम 98, कु.अंकिता मिश्रा द्वितीय 92, क्लास-11 जीवविज्ञान संकाय से हनी शेण्डे प्रथम 99.2, हर्ष साहू द्वितीय 96.8 तथा क्लास-11 कॉमर्स संकाय से कु.निहारिका साहू प्रथम 82.8, कु.ईशिका यादव द्वितीय 70.8 अंक प्राप्त किया है। संस्था के सभी सफल छात्र/छात्राओं को संस्था के प्राचार्य एजाज अली हारामी, रियाज अली हारामी द्वारा बच्चों की उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए बधाई दी है। इस अवसर पर परीक्षा प्रभारी पी.आर.ठाकुर, सुकाल सिंह साहू, कार्यालय प्रभारी प्रकाश यादव, प्रधानपाठिका सबा हारामी आदि शिक्षकगण साथ ही अभिभावकगण भी उपस्थित रहे।

पहला कॉलम...

बांधाबाजार में पानी के किल्लत से जनता परेशान

बांधाबाजार (दावा)। बांधाबाजार में दो, तीन दिनों से गांव के नलों में पानी नहीं आने से जनता हलाकान परेशान है वहीं भीषण गर्मी, तेज तापमान में अधिक पानी की आवश्यकता होती है और ऐसे समय में पीने, के पानी की किल्लत खाने के लिए पानी नलों में नहीं आने से गांव वाले अत्यधिक परेशान, हलाकान है और पंचायत के जनप्रतिनिधियों लोग अपने घरों में कुलर चालू कर सोए थे। जैसे-तैसे कर आज टैकर कि व्यवस्था कर पानी सप्लाई किया गया, उसमें भी सभी को प्रयास पानी नहीं मिल पा रहा है। गांव वाले थे, जनप्रतिनिधियों से मांग कि है, कि बड़ती गर्मी तेज तापमान को ध्यान में रखते हुए शीघ्र पानी की समस्या का समाधान किया जाना चाहिए।

भाजपा नेता दिनेश गांधी दुर्ग ग्रामीण के प्रचार में

राजनांदगांव (दावा)। भाजपा तीसरे चरण के मतदान के लिये दूसरे चरण प्रचार से फुसंत पाये नेताओं की अन्य जिलों के विधानसभाओं में लोकसभा के प्रचार हेतु जिम्मेदारी सौंप रही है। जिले के लगभग सभी वरिष्ठ नेताओं को किसी न किसी लोकसभा क्षेत्र के विधानसभाओं में चुनाव प्रचार कार्य व चुनाव जीतने की रणनीति बनाने की जिम्मेदारी सौंपी गई है, इसी क्रम में जिले के कदावर नेता दिनेश गांधी को दुर्ग विधानसभा क्षेत्र के ग्रामीण इलाकों की जिम्मेदारी सौंपी गई है। श्री गांधी पिछले तीन दिनों से दुर्ग ग्रामीण के दो दर्जन से भी अधिक ग्रामों का दौरा करके बैठक व चुनावी सभाओं को संबोधित कर चुके है। वे अपने प्रचार जल्ये के साथ दिन-रात प्रचार कार्य में तल्लीन है।

हरदुवा मीडिल स्कूल में वार्षिक परीक्षा परिणाम घोषित



राजनांदगांव (दावा)। हरदुवा शासकीय मीडिल स्कूल में वार्षिक परीक्षा का परिणाम घोषित किया गया। इस अवसर पर प्रधान पाठक नरेश साहू सर शिक्षकगण - बेहरा सर, पालनी मैडम, धनुकलाल पाल सर, लुनकरगण वर्मा सर, ज्ञानेश्वर सर एवं शाला समिति के अध्यक्ष शिवेन्द्र वर्मा पाठकगण सदस्य रोहित वर्मा मुख्य रूप से उपस्थित थे। नरेश साहू, लुनकरगण वर्मा सर ने बच्चों को सम्बोधित करते हुए बच्चों की उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए बच्चों को नई उचाईयों की ओर निरंतर आगे बढ़ते रहने के लिए प्रोत्साहन किया एवं रिजल्ट का वितरण किया गया जिसमें कक्षा 6वीं में प्रथम स्थान धनंजय वर्मा, कक्षा 7वीं में डाकेश वर्मा, कक्षा 8वीं में गौरव वर्मा ने प्रथम स्थान प्राप्त कर ग्राम हरदुवा स्कूल का नाम गौरवित किया, उपरोक्त जानकारी रोहित वर्मा द्वारा दिया गया।

शासकीय शाला पिनकापार का परीक्षा परिणाम घोषित



हरदी (दावा)। शासकीय बालक प्राथमिक/माध्यमिक शाला पिनकापार का परीक्षा परिणाम घोषित किया गया। जिसमें कक्षा आठवीं से प्रथम स्थान त्रिभुवन, द्वितीय देवेन्द्र कुमार, कक्षा सातवीं में लोकेंद्र कुमार देवांगन प्रथम, मेहुल मेश्राम द्वितीय, कक्षा 6वीं में श्वेश कुमार प्रथम, यश साहू द्वितीय स्थान पर रहा। पूर्व सरपंच दिलेश्वर भुआर्य ने अपने उद्बोधन में सभी छात्र की उज्ज्वल भविष्य की कामना की शाला के प्रधान पाठक धन सिंह कौमार्य, प्राथमिक शाला के प्रधान पाठक शत्रुघ्न सोनकर, शिक्षक रुकम सिंह देवांगन, दुर्गा सोनकर, हेमपुष्या सुखदेवे, शाला प्रबंध समिति के अध्यक्ष ठाकुर राम सोनी, प्राथमिक शाला प्रबंध समिति के अध्यक्ष आम प्रकाश कौसमा, सदस्य जगदीश देवांगन, सुभाष खरे आदि ने सभी छात्र की उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

राइट गुरुकुल हायर सेकेण्डरी का परिणाम शत-प्रतिशत

डोंगरगाँव (दावा)। शहर में संचालित राइट गुरुकुल का स्थानीय परीक्षा परिणाम मंगलवार 30 अप्रैल को पालकों की उपस्थिति में घोषित किया गया।

परीक्षा परिणाम की घोषणा सबसे पहले कक्षा नर्सरी में परिधि राणा प्रथम, हर्ष साहू द्वितीय, के.जी.वन में रोहित मंडवी प्रथम, योगिता साहू एवम् मोनिशा पटेल द्वितीय, के.जी.टू में ओजस्वी अंबादे व सायांशी सिंह प्रथम, धनरसिंह माली, स्वाति साहू व माही यादव द्वितीय, कक्षा 1 से रोहन नयक प्रथम, गरिमा चंद्रवंशी व कृष्णा साहू द्वितीय, कक्षा 4 से दीपांशु रावते प्रथम, निखिता साहू व गुरुअंश रावते द्वितीय, कक्षा 5 से लावण्या दीमर प्रथम, दिवंकल यादव द्वितीय, कक्षा 6 से रेणु महोबिया प्रथम, हार्दिक



जैन द्वितीय, कक्षा 7 में खुशी नायक प्रथम, आभा देवांगन द्वितीय, कक्षा 8 में चंचल रामटेकर प्रथम, आइशा खान द्वितीय, कक्षा 9 में यासमीन चंद्रवंशी प्रथम, जय निर्मलकर द्वितीय स्थान प्राप्त किया है। इसी प्रकार हिन्दी माध्यम में कक्षा 1ली में जौतिश दीमर प्रथम, निक्किता द्वितीय, कक्षा 2री से प्रिया कंव्वर प्रथम, भावेश सोनकर द्वितीय, कक्षा 3री से रुद्राक्षी नेताम प्रथम, देविका दीमर द्वितीय, कक्षा 4थी से इशांत राजपूत प्रथम, कक्षा 5वीं से जानवी बरमाते प्रथम, हिमांशु

भारतीय पब्लिक स्कूल में घोषित हुये स्थानीय परीक्षाओं के परीक्षा परिणाम

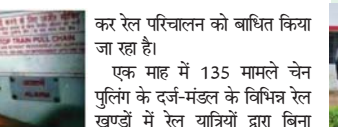
डोंगरगाँव (दावा)। शहर के मानव समाज कल्याण एवं शिक्षण समिति द्वारा संचालित भारतीय पब्लिक हायर सेकेण्डरी स्कूल में स्थानीय परीक्षाओं कक्षा नर्सरी से आठवीं, नौवीं एवं ग्यारहवीं के नतीजे 30 अप्रैल दिन मंगलवार को पालकों की उपस्थिति में कर्मा समाजिक भवन में घोषित किया गया। संस्था प्राचार्य सुनील कुमार पाण्डेय से प्राप्त जानकारी के अनुसार परीक्षा परिणाम की घोषणा मुख्य अतिथि लक्ष्मीनारायण गुप्ता, अध्यक्षता शैलजा पाण्डेय, विशिष्ट अतिथि डोमरे साहू, नामदेव साहू के गरिमाप्रयोगे उपस्थिति में स्थानीय परीक्षाओं के नतीजे घोषित किये गये, कक्षा नर्सरी में प्रथम कु.खुशी साहू व द्वितीय रूद्र कुमार चंद्रवंशी, कक्षा पी.वी.वन में प्रथम अनिरुद्ध साहू द्वितीय दिव्यांशी यदु, कु.दिव्यांशी रहे। कक्षा पी.पी.टू में प्रथम लवसिंह राजपूत, द्वितीय मोक्ष साहू, कक्षा पहली में प्रथम कु.छवि वैष्णव, द्वितीय अतुलका पटेल, कक्षा दूसरी में प्रथम यश भुआर्य, द्वितीय आदित्य राज, कु.जिज्ञासा, कु.निधी कुम्वर, कक्षा तीसरी में प्रथम कु.लीना पटेल द्वितीय कु.याचिका, कक्षा चौथी में प्रथम कु.विधी देवांगन, कु.युक्तांक्षी द्वितीय प्रियांशु, कक्षा पांचवीं में प्रथम कु.निधी नारी, द्वितीय शैल साहू रहे। कक्षा छठवीं में प्रथम प्रजा देवांगन, द्वितीय झरना साहू, कक्षा सातवीं में प्रथम प्रियंका



पटेल, द्वितीय कु.कुसुम, कक्षा आठवीं में प्रथम कु.पूज देवांगन, द्वितीय पूजा पटेल, कक्षा नौवीं में प्रथम गजेन्द्र कुमार साहू, द्वितीय लवली हिरवानी रहे। इसी प्रकार कक्षा ग्यारहवीं में तीनों संकाय का संयुक्त परीक्षा परिणाम घोषित किया गया, जिसमें प्रथम कु.खिलेश्वरी, द्वितीय सुधीर कुमार एवं तृतीय स्थान पर कु.निन्ता रहे, सभी छात्र-छात्राओं को आकर्षक मोमेंटो एवं पदक से सम्मानित किया गया। इन सम्मानों के अलावा गणित में 100 में 100 अंक प्राप्त करने पर कु.कुसुम देवांगन एवं पूजा पटेल कक्षा 08वीं को विशेष सम्मान प्रदान किया गया। छात्र छात्राओं के इस शानदार सफलता पर मानव समाज कल्याण एवं शिक्षण समिति के शैलजा पाण्डेय अध्यक्ष, सतीष सागर सतीष सदस्य, गौरीबाई झाड़े सदस्य, संस्था के संरक्षक संतोष कुमार वैष्णव, श्रीमती उमादेजे राजपूत, लक्ष्मी नारायण गुप्ता, प्रधानपाठक पी.एल.बजा, प्रधानपाठिका दामिनी यदु, सहित समस्त स्टाफ ने शुभकामनाएं देते हुये उज्ज्वल भविष्य की कामना की है।

अप्रैल माह में अब तक कुल 135 चेन पुलिंग के मामले दर्ज

डोंगरगाँव (दावा)। भारतीय रेलवे द्वारा यात्रियों के लिए बनाए गए नियमों की जानकारी हर यात्री को होनी चाहिए। नियमों से अनजान होना आपको भारी पड़ सकता है। अगर आप के द्वारा अनजाने में भी किसी नियम का उल्लंघन किया जाता है तो रेल अधिनियम 1989 की धारा 141 के तहत बिना उचित एवं पर्याप्त कारण ट्रेन में अलार्म चेन को खींचने पर एक हजार रुपये का जुर्माना या एक साल तक की जेल हो सकती है। दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे नागपुर मंडल में जहाँ एक ओर परिचालन क्षमता को बढ़ाने के लिए अधोसंरचना विकास एवं तीसरी रेल लाइन निर्माण कार्य को तीव्र गति से पूरा किया जा रहा है ताकि इससे न केवल देश की अर्थव्यवस्था को गति मिलेगी बल्कि यात्री गाड़ियों की परिचालन क्षमता को भी गति मिल सके। रेलवे परिचालन का दबाव काफी हद तक कम किया जा सकेगा और अधिक से अधिक रेल गाड़ियों का परिचालन तथा रेल गाड़ियों की समयबद्ध बेहतर होना एवं रेल सेवा में बढतीरी के साथ-साथ यात्रियों को बेहतर, सुगम और सुरक्षित रेल सेवा प्रदान किया जा सकेगा। वहीं दूसरी ओर रेल यात्रियों द्वारा लगातार रेल नियमों का उल्लंघन



कर रेल परिचालन को बाधित किया जा रहा है। एक माह में 135 मामले चेन पुलिंग के दर्ज-मंडल के विभिन्न रेल खण्डों में रेल यात्रियों द्वारा बिना किसी ठोस वजह के ट्रेन में लगे अलार्म चेन पुलिंग के कुल 135 मामले अप्रैल माह में अब तक दर्ज किये गए हैं जिनके विरुद्ध नियमानुसार कारवाई की गई है, जिसमें गाँविया, राजनांदगाँव, दुर्ग-रसमख रेल खंड, डोंगरगाँव, राजनांदगाँव आउटर, गाँविया स्टेशन / आउटर शामिल है। बिना किसी ठोस वजह के ट्रेन में लगे अलार्म चेन पुलिंग के मामलों पर अंकुश लगाने के उद्देश्य से दिलीप सिंह-वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक के दिशा निर्देशानुसार गाँविया स्टेशन पर एटी एसीपी कमरिशियल स्कॉड का गठन किया गया, जिसमें चेकिंग स्टाफ तथा रेल सुरक्षा बल द्वारा संयुक्त रूप से कारवाई की जा रही है। गाड़ी खड़ी करने के लिए जंजीर रेल प्रशासन सभी यात्रियों से स्टेशन परिसर एवं डिब्बों को स्वच्छ रखने, कूड़ा-कचरा निर्धारित कूड़ादान में ही डालने, बिना किसी उचित एवं पर्याप्त कारण के बिना ट्रेन में लगे अलार्म चेन न खींचने तथा बिना/अनिर्णयित टिकट यात्रा न करने की अपील करता है।

मनगटा में आभार एवं सम्मान समारोह का आयोजन किया गया

टेड़ेसरा (दावा)। ग्राम मनगटा में सद्गुरु कबीर धनी धर्मदास वंशाली एवं पंथ हुजूर प्रकाश मुनिनाम साहब एवं पंथ उदित मुनिनाम साहब की कार्य से संत समागम कार्यक्रम किया गया था। जिसमें खास तौर पर दामाखंडे से पधारे सुलक्षणा माता साहिबा के वाणी वचनों को सुनने के लिए हजारों की संख्या में संत जन उपस्थित थे। इसके सफल आयोजन को लेकर परिक्षेत्र टेड़ेसरा के तत्वधान में ग्राम मनगटा के संत जनों के द्वारा 28 अप्रैल को आभार एवं सम्मान समारोह का आयोजन संपन्न किया गया। जिसके मुख्य अतिथि प्रमोद साहब उपाध्यक्ष, सद्गुरु कबीर धनी धर्मदास साहब वंशाली प्रतिनिधि सभा कबीर धर्मदास दामाखंडे, महंत युगल किशोर साहब संबलपुर, मोहनशा धनकर, जनपद सभापति राजनांदगांव के कर कमल दारा सम्मान समारोह के अवसर पर प्रशस्ति-पत्र भी प्रदान किया गया। इस आयोजन में मेश साहू, परमानंद साहू, तिजेधरी साहू उपाध्यक्ष, ललित साहू कोषाध्यक्ष, नंदकिशोर साहू, नमूचन्द साहू परिक्षेत्र समिति टेड़ेसरा एवं लूमन दास



साहू परिक्षेत्र मीडिया प्रभारी, रेखलाल साहू, तोरेश्वर साहू, जयम साहू, चिमन साहू सभी उपस्थित होकर परिक्षेत्रीय संत जनों एवं समस्त कबीर पंथी समाज ग्राम मनगटा के संत जनों की उपस्थिति में सम्मान समारोह का आयोजन संपन्न किया गया। इस समारोह में उपस्थित मुख्य अतिथि प्रमोद साहब के द्वारा कहा गया कि इस तरह के आयोजन आगे भी भव्य तरीके से आगामी वर्ष में किया जाएगा। साथ ही साथ पंथ का प्रचार-प्रसार इसी तरह से इन मन धन से सद्गुरु कबीर साहब के प्रति अपनी श्रद्धा व विश्वास के साथ ही पंथ के बारे में दूसरे समाज के संत जनों को भी साहब के वाणी वचनों को सुनने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। जिससे आने वाले पीढ़ी के बच्चे भी संस्कारी बने रहे। और पंथ की प्रचार प्रसार को इसी तरह आगे बढ़ते रहे।

कृषि और इलेक्ट्रॉनिक एवं हाइड्रिवर ट्रेड का संचालन प्रारंभ



डोंगरगाँव (दावा)। शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बोरतालाव में व्यावसायिक पाठ्यक्रम के अन्तर्गत कृषि और इलेक्ट्रॉनिक एवं हाइड्रिवर ट्रेड का संचालन किया जा रहा है। इस पाठ्यक्रम के अन्तर्गत अध्ययनरत ग्यारहवीं एवं बारहवीं के 75 छात्र छात्राओं को 10 दिवस इंटरशिप कार्य पूर्ण करने पर दक्षता प्रमाण पत्र प्रदान किया गया। इस दौरान संस्था प्राचार्य श्रीमती वंदना चौरे, व्यावसायिक प्रशिक्षक डोमेश्वर साहू, विवेक साहू, विद्यानंद डोंगेर, अपोल एका, नारद सिन्हा, सुदेश चौरिया, लीना कुजुर, खिलेश्वरी ठाकुर, काजल यादव, शारदा शक्ति, रामेश्वरी जतपेले, चन्द्रहास साहू एवं छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

जल संरक्षण के लिए मनरेगा मजदूरों ने लिया संकल्प



उतेलाकाडीह (दावा)। राजनांदगाँव ब्लॉक के नागलदाह एवं बहेराभांज में मनरेगा के तहत तालाब गहरीकरण का कार्य चल रहा है। इस दौरान मजदूरों ने जल संरक्षण करने का संकल्प लिया। बासुला निवासी स्वयंसेवक तेजस्वी वर्मा ने गांव पहुंचकर मनरेगा स्थान में मजदूरों को जल संरक्षण के महत्व को बताते हुए कहा कि गिरते भूमिगत जल के स्तर को हमें बचाना होगा। इसे व्यर्थ बर्बाद न करें क्योंकि जल हमारे लिए अमूल्य है, इसका

पहला कॉलम...

ओला कैम्स के सीईओ हेमंत बख्शी ने इस्तीफा दिया

नई दिल्ली। राइड-हेलिंग प्लेटफॉर्म ओला कैम्स के सीईओ हेमंत बख्शी ने पद संभालने के चार महीने बाद ही इस्तीफा दे दिया है। यह जानकारी सूत्रों ने दी। कंपनी को एक पुनर्गठन प्रक्रिया से गुजरने की भी उम्मीद है जो कम से कम 10 प्रतिशत कार्यबल को प्रभावित करेगी। जनवरी में ओला की मूल कंपनी, एएनआई टेक्नोलॉजीज ने यूनिवर्सल के पूर्व कार्यकारी बख्शी को कंपनी के दिन-प्रतिदिन के संचालन की देखभाल के लिए नया सीईओ नियुक्त किया। सूत्रों के मुताबिक, नए सीईओ की नियुक्ति होने तक कंपनी के संस्थापक भाविश अग्रवाल कार्यभार संभालेंगे। यह विकास ओला कैम्स द्वारा आरंभिक सार्वजनिक प्रवेश (आईपीओ) के लिए निवेश बैंकों के साथ प्रारंभिक चर्चा शुरू करने के कुछ ही हफ्तों बाद आया है। इस महीने की शुरुआत में ओला ने घोषणा की थी कि वह बढ़ती प्रतिस्पर्धा के बीच यूके, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड में अपने सभी मौजूदा वित्तीय बाजारों को बंद कर रही है। इसमें कहा गया है कि वह भारतीय बाजार पर ध्यान केंद्रित करेगी, क्योंकि उसे देश में विस्तार का अपार अवसर दिख रहा है। पिछले साल ओला ने पुनर्गठन अभ्यास के हिस्से के रूप में अपने ओला कैम्स, ओला इलेक्ट्रिक और ओला फाइनेंशियल सर्विसेज वर्टिकल से लगभग 200 कर्मचारियों को निकाल दिया था।

उत्तरी कैरोलिना में कई लॉ एनफोर्समेंट अधिकारियों पर फायरिंग, 3 की मौत

नई दिल्ली। अमेरिका के दक्षिणी क्षेत्र के राज्य उत्तरी कैरोलिना के चार्लोट में कई लॉ एनफोर्समेंट अधिकारियों को गोली मारने की घटना सामने आई है। जहां गोलियां चली हैं वहां से एक सदस्य का शव मिला है। जिसे सूत्रों की टीम ने मार गिराया है। सीबीएस न्यूज ने सूत्रों के हवाले से बताया है कि कुल छह लोगों को गोली मारी गई जिनमें से तीन की मौत हो गई। हालांकि, पुलिस ने केवल यह बताया है कि कई अधिकारियों को गोली मारी गई है, लेकिन अभी तक मौत की पुष्टि नहीं हुई है। शायद के मुताबिक, चार्लोट-मेकलेनबर्ग पुलिस ने एक बयान में कहा कि गोलीबारी पूर्वोत्तर चार्लोट में हुई, दुःखद, अमेरिकी मार्शल टास्क फोर्स के अधिकारी एक जांच कर रहे थे इतने में गोलीबारी शुरू हो गई। जांच में कई एजेंसियों के अधिकारी शामिल थे। पुलिस विभाग ने सोशल मीडिया पर कहा कि कई लॉ एनफोर्समेंट अधिकारियों को गोली मारी गई है। सभी को अस्पताल ले जाया जा रहा है।

फिर गिरा सोने-चांदी का भाव



नई दिल्ली। मल्टी कमांडिटी एक्सचेंज यानी एमसीएक्स पर सोने की कीमतों में गिरावट आई है क्योंकि अमेरिकी फेडरल रिजर्व इस सप्ताह के अंत में ब्याज दर में कटौती का फैसला करने वाला है। एमसीएक्स पर जून का सोना वायदा

257 रुपये गिरकर 71,345 रुपये प्रति 10 ग्राम पर आ गया। इसी तरह मई चांदी वायदा 457 रुपये गिरकर 80,395 रुपये प्रति किलोग्राम पर आ गई है। वहीं, ईटी की एक रिपोर्ट के मुताबिक, केंद्रीय बैंकों और सुरक्षित निवेश चाहने वाले निवेशकों की मजबूत मांग के कारण सोने की कीमतों में लगातार बढ़ोतरी देखने को मिली। दूसरी तरफ अमेरिकी बाजार में सोना करीब 2,330 डॉलर प्रति औंस पर स्थिर है। आगामी अमेरिकी फेडरल रिजर्व बैठक से पहले, गोल्ड में लगभग 5% की वृद्धि देखने को मिली है। भले ही फेडरल रिजर्व उम्मीद के मुताबिक ब्याज दरों में कटौती नहीं करेगा, लेकिन इस साल सोने की कीमतें 13% से अधिक बढ़ गई हैं क्योंकि केंद्रीय बैंकों ने जमकर खरीदारी की, चीन जैसे एशियाई बाजारों से गोल्ड की मजबूत मांग देखने को मिली।

आप को झटका, राजन एवेन्यू कोर्ट ने की मनीष सिसोदिया की याचिका खारिज

नई दिल्ली। दिल्ली की एक अदालत ने शराब नीति मामले में आरोपी बनाए गए दिल्ली के पूर्व उप मुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया को बड़ा झटका दिया है। कोर्ट ने उनकी जमानत याचिका खारिज कर दी है। बता दें कि मनीष सिसोदिया को दूसरी जमानत याचिका है, इससे पहले भी निचली अदालत और सुप्रीम कोर्ट ने उन्हें जमानत देने से इनकार कर दिया था। अदालत में सुनवाई के दौरान ईडी के वकील ने उप मुख्यमंत्री की जमानत याचिका का विरोध किया। ईडी के वकील ने तर्क रखा कि दिल्ली शराब नीति मामले में मनीष सिसोदिया मुख्य साक्षियों हैं, ऐसे में उन्हें जमानत नहीं दी जा सकती है। जांच एजेंसी के वकील ने आगे कहा कि मनीष सिसोदिया प्रभावशाली व्यक्ति हैं, अगर उन्हें जमानत मिलती है तो वे सबूतों को सफाई कर सकते हैं, वह इस मामले से जुड़े गवाहों को प्रभावित कर सकते हैं। जानकारी के अनुसार मनीष सिसोदिया फरवरी 2023 से जेल में हैं। बता दें कि दिल्ली शराब नीति घोटाले में ईडी ने उन्हें मनी लॉन्ड्रिंग में आरोपी बनाया है।

रोमांचक मैच में लखनऊ की जीत, मुंबई को चार विकेट से हराया, 19वें ओवर में पलटा वासा

लखनऊ। लखनऊ सुपर जायंट्स ने आईपीएल 2024 के 48वें मुकाबले में मुंबई इंडियंस को 4 विकेट से हरा दिया। दोनों के बीच मौजूदा सीजन में पहली बार मैच खेला गया। हर स्लू को सीजन में छठी जीत है। टीम 12 अंक के साथ पॉइंट्स टेबल में तीसरे स्थान पर आ गई। दूसरी ओर MI ने लगातार तीसरा मुकाबला गंवाया।



लखनऊ के भारत रत्न श्री अटल बिहारी वाजपेयी स्टेडियम में LSG ने टीएस जीतकर गेंदबाजी चुनी। मुंबई ने 20 ओवर में 7 विकेट पर 144 रन बनाए। जवाब में लखनऊ ने 19.2 ओवर में 6 विकेट खोक टारगेट हासिल कर लिया। मार्कस स्टोयनिस ने 45 बॉल पर 62 रन की पारी खेली, जबकि कप्तान केएल राहुल ने 28 रन का योगदान दिया। मुंबई से कप्तान हार्दिक पंड्या ने 2 विकेट लिए।

स्टोयनिस प्लेयर ऑफ द मैच भी रहे। MI से नेहरू वाधेरा ने 46, टिम डेविड ने 35 और इशान किशन ने 32 रन बनाए। मोहम्मिन खान ने 2 विकेट लिए। मयंक यादव, नवीन-उल-हक, रवि बिशर्नोई और मार्कस स्टोयनिस ने एक-एक विकेट लिए।

पूरन के बल्ले से निकली जीत, लखनऊ टॉप-3 में पहुंची

आखिरी ओवर डलने आए

पर बल्लेबाजी के लिए आए निकोलस पूरन ने टीम को जीत दिलाने में अहम भूमिका निभाई। उन्होंने पारी के 19वें ओवर में करुणाल पांड्या के साथ 10 रन बटोरे और टीम को जीत के करीब पहुंचा दिया।

आखिरी ओवर में टीम ने चार गेंदों के शेष रहते जीत दर्ज कर ली। इस मुकाबले में मुंबई के लिए हार्दिक पांड्या ने दो विकेट चटकवाए जबकि तुषार, कोएल्टी और नवी को एक-एक सफलता मिली।

मुंबई ने लखनऊ को दिया था 145 रनों का लक्ष्य

टीएस हारकर पहले बल्लेबाजी करने उतरी मुंबई इंडियंस का बल्लेबाजी क्रम इस मुकाबले में कुछ खास कमाल नहीं दिखा पाया। यही वजह रही कि टीम ने 20 ओवर में सात विकेट गंवाकर 144 रन बनाए।

टी-20 वर्ल्ड कप 2024 के लिए भारतीय टीम का एलान

नई दिल्ली। टी-20 वर्ल्ड कप 2024 के लिए भारतीय टीम का एलान हो गया है। रोहित शर्मा की कप्तानी में सेलेक्टर्स ने 15 सदस्यीय टीम की घोषणा की है। विराट कोहली को टीम में शामिल किया गया है, जबकि युजवेंद्र चहल को टीम में वापसी हुई है। हालांकि, अपनी बल्लेबाजी से खूब धूम मचाने वाले रिंकु सिंह को मुख्य टीम में जगह नहीं दी गई है। शिवम दुबे के लिए 15 सदस्यीय टीम में शामिल किया गया है।



रिंकु सिंह मुख्य टीम से बाहर रिंकु सिंह को टी-20 वर्ल्ड कप 2024 के लिए चुनी गई भारत की मुख्य टीम में जगह नहीं दी गई है। रिंकु को टीम में बतौर उपनिर्देशक और पादरीशों में शामिल किया गया है। शिवम दुबे को मिला मौका आईपीएल 2024 में बल्ले से जमकर तबाही मचा रहे शिवम दुबे को 15 सदस्यीय टीम में शामिल किया गया है। दुबे का

प्रदर्शन चेन्नई सुपर किंग्स की ओर से खेलते हुए कमाल का रहा है। शिवम इस सीजन खेले 9 मैचों में 58.33 की औसत और 172 के स्ट्राइक रेट से खेलते हुए 350 रन टोक चुके हैं। शिवम के बल्ले से इस सीजन 3 फिफ्टी निकल चुकी हैं। युजवेंद्र चहल की हुई वापसी आईपीएल 2024 में अपनी

फिरकी से जादू बिखेर रहे युजवेंद्र चहल की लंबे समय बाद भारत की टी-20 टीम में वापसी हुई है। राजस्थान रॉयल्स की तरफ से खेलते हुए इस सीजन चहल का प्रदर्शन गजब का रहा है। चहल के साथ-साथ अक्षर पटेल को भी टीम में मौका दिया गया है। वहीं, अर्शदीप सिंह भी टीम में जगह बनाने में सफल रहे हैं।

टाटा ग्रुप को चौथी तिमाही में भारी घाटा, 4.5 फीसदी तक गिरे शेयर

नई दिल्ली। टाटा केमिकल्स के चौथी तिमाही के नतीजों के बाद उसके शेयरों में बड़ी गिरावट आई है। टाटा ग्रुप की इस कंपनी को जनवरी-मार्च तिमाही के दौरान 818 करोड़ रुपये का शुद्ध घाटा हुआ है। इसके बाद मंगलवार को टाटा केमिकल्स के शेयर 4.5 प्रतिशत तक फिसलकर 1,050 रुपये पर आ गए। टाटा केमिकल्स ने सोमवार को अपने तिमाही नतीजे जारी किए थे। कंपनी ने बताया कि उसे चौथी तिमाही में 818 करोड़ रुपये का शुद्ध घाटा हुआ। इसकी बड़ी वजह कंपनी की आमदनी में बड़ी गिरावट है। साथ ही, टाटा केमिकल्स ने अपने ब्रिटेन के बिजनेस में लॉस के लिए कुछ प्रोविजन भी किया है। एक साल पहले की समान अवधि में टाटा केमिकल्स को 694 करोड़ का

शुद्ध लाभ हुआ था। कंपनी ने रेगुलेटरी फाइलिंग में बताया कि ऑपरेशन से टैक्स के बाद समेकित लाभ पिछले वित्त वर्ष की चौथी तिमाही में घटकर 145 करोड़ रुपये हो गया। एक साल पहले यह 694 करोड़ रुपये था। वहीं, चौथी तिमाही में कंपनी की कुल आय एक साल पहले घटकर 3,589 करोड़ रुपये रह गई, जो एक साल पहले 4,482 करोड़ रुपये थी। टाटा केमिकल्स के निवेशकों को लंबे समय से अच्छे रिटर्न नहीं मिल रहा। पिछले 6 महीने में कंपनी ने करीब 12 और एक साल में सिर्फ 10 प्रतिशत का रिटर्न दिया है। हालांकि, पिछले 5 साल की बात करें, तो टाटा केमिकल्स के निवेशकों को जरूर 335 प्रतिशत से अधिक का मुनाफा हुआ है।

मेरी निजी इच्छा है कि रिंकु सिंह टी20 विश्व कप टीम में जगह बनाएं: शाहरुख खान

कोलकाता। जैसे-जैसे आगामी आईसीसी पुरुष टी20 विश्व कप 2024 के लिए टीम की घोषणा करने की समय सीमा नजदीक आ रही है, वैसे-वैसे टीम संयोजन को लेकर काफी दिलचस्पी बढ़ती जा रही है और विशेषतः

मालिक शाहरुख खान द्वारा दिखाए गए विश्वास और समर्थन का भी प्रमाण है। रिंकु कप संभावनाओं के प्रति आशावाद व्यक्त कर रहे हैं। आरबीआई ने अपने सर्कुलर में बताया है कि 31 मार्च, 2023 को समाप्त अवधि के लिए विनियमित संस्थाओं (बैंकों, एनबीएफएसी और इन्सुरेंस फंडिंग कंपनियों) की ऑनसाइट जांच के दौरान, शराबदारों द्वारा शुल्क वसूलने में कुछ अनुचित प्रथाओं का सहारा लेने के उदाहरण सामने आए। आरबीआई ने सर्कुलर में कहा, इसलिए, निष्पक्षता और पारदर्शिता के लिए सभी विनियमित संस्थाओं को निदेश दिया जा रहा है कि वे शराब के तैयारी, ब्याज आवेदन और अन्य शुल्कों के संबंध में अपनी प्रथाओं की समीक्षा करें और सिस्टम स्तर पर बदलाव सहित सुधारकार्य करें। शराब की मंजूरी की तारीख या शराब समझौते की निष्पादन की तारीख से ब्याज लगाना, न कि शराब को धनराशि के वास्तविक वितरण की तारीख से। इसी प्रकार, चेक द्वारा वितरित शराब के मामले में, ऐसे उदाहरण देखे गए, जहां चेक की तारीख से ब्याज लिया गया, जबकि चेक कई दिनों बाद ग्राहक को सौंपा गया।

महाने के दौरान शराब के वितरण या पुनर्भुगतान के मामले में, कुछ बैंक केवल उस अवधि के लिए ब्याज नहीं ले रहे थे, जिसके लिए शराब बकाया था।

करते हुए, शाहरुख ने स्टार स्पॉट्स नाइट क्लब प्रेजेंट्स किंग खान रूस्स पर कहा, ऐसे अद्भुत खिलाड़ी देश के लिए खेल रहे हैं। मैं वास्तव में रिंकु, इशाअख्तर और अन्य टीमों के कुछ अन्य युवाओं के विश्व कप टीम में होने का इंतजार कर रहा हूँ।

प्रथम पेज का शेष

सतर्क हो गई हैं। सादी वर्दी में अलग-अलग जगहों पर भी जवान तैनात रहेंगे। जवानों के लिए सर्विलांस व इलेक्ट्रॉनिक उपकरण का भी सहारा लिया जाएगा। वीबीआईपी कार्यक्रम को देखते अयोध्या के अलावा अन्य जिलों के पुलिस अधिकारियों को भी तैनात किया गया है, जिन्होंने मंगलवार को ही पहुंचकर कार्यभार ग्रहण कर लिया है। पुलिस लाइन सभागार में एडीजी जौन पीयूष मोडिया, आईजी प्रवीण कुमार व एसएसपी राजकरन नथर ने उन्हें ब्रीफ भी किया है।

उधर, राष्ट्रपति के मार्ग में पड़ने वाले सभी होटल, धर्मशालाओं, लॉज को भी खंगाला गया है। उनमें ठहरे यात्रियों को भी पड़ताल की गई है। वहीं, शहर के अन्य होटलों की भी छानबीन की गई है। आईजी प्रवीण कुमार ने बताया कि राष्ट्रपति के आगमन पर सुरक्षा घेरा सख्त रहेगा। आसपास के जिलों से पुलिस अधीक्षक, उपाधीक्षक, निरीक्षक, उपनिरीक्षक व सिपाहियों को भी तैनात किया गया है।

मणिपुर में दो महिलाओं की परेश...

भीड़ कांपोकपी जिले में उनके गांव में जबन घुस गई थी। महिलाएं अन्य पीड़ितों के साथ भीड़ से उबलने के लिए जंगल में भागीं, लेकिन दंगाइयों ने उन्हें देख लिया। दोनों महिलाएं और एक पुरुष किस तरह पुलिस जिनगी तक पहुंचे, जिसमें दो पुलिसकर्मी और चालक बैठे थे। गाड़ी के बाहर तीन-चार कर्मी थे। पीड़ितों में से एक ने चालक से उन्हें सुरक्षित स्थान पर ले जाने के लिए कहा, लेकिन चालक ने कहा कि उसके पास चाबी नहीं है। पीड़ित महिलाओं में से एक महिला

कारगिल युद्ध में देश के लिए पराक्रम दिखाने वाले सैनिक को पत्नी है। आरोपपत्र के अनुसार, पीड़ितों ने पुलिसकर्मीयों से उन्हें सुरक्षित निकालने की गुहार लगाई, लेकिन उन्हें कोई मदद नहीं दी गई। जब भीड़ जिप्सी की ओर आई तो पुलिसकर्मीयों ने पीड़ितों को भीड़ के हवाले कर दिया और मौके से भाग गए। दंगाइयों ने महिलाओं को बाहर खींच लिया, उन्हें निर्वस्त्र कर घुमाया और बाद में उनका यौन उल्टीड़न किया। सीबीआई ने हुदरेंस हेरोदास मैतेयी, जिसे जुलाई में मणिपुर पुलिस ने पकड़ा था, और पांच अन्य के खिलाफ आरोपपत्र दाखिल किया है और एक किशोर के खिलाफ सीसीएल दर्ज की गई है। आरोपितों पर भारतीय दंड संहिता की विभिन्न धाराओं के तहत आरोप लगाए गए हैं, जिनमें सामूहिक दुष्कर्म, अपराधिक साजिश से संबंधित धाराएं शामिल हैं।

बाबा रामदेव के खिलाफ अदालती...

श्रीष अदालत ने अवमानना कार्यवाही का सामना कर रहे बाबा रामदेव और आचार्य बालकृष्ण को अपने आचरण के संबंध में की गई सार्वजनिक माफी को उन्मत्त करने वाले समाचार पत्र दाखिल करने की अनुमति दी। उच्चतम न्यायालय ने उत्तराखंड सरकार के संयुक्त निदेशक (उत्तराखंड लाइसेंसिंग प्राधिकरण) मिथिलेश कुमार की ओर से दायर एक हलफनामे पर भी आपत्ति जताई, जिसमें कहा गया था कि उन्होंने अदालत के 10 अप्रैल के आदेश के बाद बाबा रामदेव द्वारा महिलाओं में से एक महिला

टी-20 वर्ल्ड कप के लिए इंग्लैंड टीम की घोषणा: जोस बटलर करेगे कप्तानी, जोफ्रा आर्चर की वापसी

स्पोर्ट्स डेस्क। वेस्टइंडीज और अमेरिका में जून में खेले जाने वाले टी-20 वर्ल्ड कप के लिए इंग्लैंड टीम का ऐलान हो गया है। इंग्लैंड क्रिकेट बोर्ड ने मंगलवार को 15 सदस्यीय टीम घोषणा की है। जोस बटलर कप्तान होंगे। तेज गेंदबाज जोफ्रा आर्चर की टीम में वापसी हुई है। आर्चर चोट की वजह से लंबे समय से टीम से बाहर चल रहे थे। टी-20 वर्ल्ड कप के लिए इंग्लैंड की टीम-जोस बटलर (कप्तान), मोईन अली, जोफ्रा आर्चर, जॉनी बेयरस्टो, हैरी ब्रूक, सैम करन, बेन डेकर, जॉन हार्टले, विल जैक्स, क्रिस जॉर्डन, लियाम लिविंगस्टोन, आदिल रशीद, फिल साल्ट, रीस टॉपले, मार्क वुड।

इंग्लैंड टी-20 वर्ल्ड कप में ग्नापी का हिस्सा

टी-20 वर्ल्ड कप 2024 में साउथ अफ्रीका रफ वी का हिस्सा

टी-20 वर्ल्ड कप के लिए इंग्लैंड टीम की घोषणा: जोस बटलर करेगे कप्तानी, जोफ्रा आर्चर की वापसी

स्पोर्ट्स डेस्क। वेस्टइंडीज और अमेरिका में जून में खेले जाने वाले टी-20 वर्ल्ड कप के लिए इंग्लैंड टीम का ऐलान हो गया है। इंग्लैंड क्रिकेट बोर्ड ने मंगलवार को 15 सदस्यीय टीम घोषणा की है। जोस बटलर कप्तान होंगे। तेज गेंदबाज जोफ्रा आर्चर की टीम में वापसी हुई है। आर्चर चोट की वजह से लंबे समय से टीम से बाहर चल रहे थे। टी-20 वर्ल्ड कप के लिए इंग्लैंड की टीम-जोस बटलर (कप्तान), मोईन अली, जोफ्रा आर्चर, जॉनी बेयरस्टो, हैरी ब्रूक, सैम करन, बेन डेकर, जॉन हार्टले, विल जैक्स, क्रिस जॉर्डन, लियाम लिविंगस्टोन, आदिल रशीद, फिल साल्ट, रीस टॉपले, मार्क वुड।

इंग्लैंड टी-20 वर्ल्ड कप में ग्नापी का हिस्सा

टी-20 वर्ल्ड कप 2024 में साउथ अफ्रीका रफ वी का हिस्सा

ज्वालामुखी से कम से कम छह किलोमीटर दूर रहने का आह्वान किया था। उत्तरी सुलाव्सी प्रांत में 725 मीटर (2,378 फीट) ऊंचा ज्वालामुखी प्रांत को राजधानी माना जा रहा है। ज्वालामुखी प्रांत को राजधानी माना जा रहा है। ज्वालामुखी प्रांत को राजधानी माना जा रहा है। ज्वालामुखी प्रांत को राजधानी माना जा रहा है।

ज्वालामुखी से कम से कम छह किलोमीटर दूर रहने का आह्वान किया था। उत्तरी सुलाव्सी प्रांत में 725 मीटर (2,378 फीट) ऊंचा ज्वालामुखी प्रांत को राजधानी माना जा रहा है। ज्वालामुखी प्रांत को राजधानी माना जा रहा है। ज्वालामुखी प्रांत को राजधानी माना जा रहा है।

ज्वालामुखी से कम से कम छह किलोमीटर दूर रहने का आह्वान किया था। उत्तरी सुलाव्सी प्रांत में 725 मीटर (2,378 फीट) ऊंचा ज्वालामुखी प्रांत को राजधानी माना जा रहा है। ज्वालामुखी प्रांत को राजधानी माना जा रहा है।



वरुथिनी एकादशी पूजन

एकादशी तिथि की शुरुआत 3 मई, शुक्रवार को रात 11 बजकर 24 मिनट से शुरू होगी और तिथि का समापन 4 मई, शनिवार को रात 8 बजकर 38 मिनट पर होगा. वरुथिनी एकादशी का पारण 5 मई को सुबह 5 बजकर 37 मिनट से लेकर 8 बजकर 17 मिनट तक होगा.

वरुथिनी एकादशी पूजन विधि
एकादशी के दिन सुबह जल्दी उठकर स्नान करने के साथ साफ कपड़े धारण कर लें. इसके बाद मंदिर की अच्छी तरह से सफाई कर लें. फिर देवी-देवताओं को स्नान कराने के बाद साफ कपड़े पहनाएं और मंदिर में दीप प्रज्वलित करें. इसके बाद व्रत का संकल्प लें और भगवान विष्णु का ध्यान करें. इस दिन भगवान विष्णु के साथ ही मां लक्ष्मी की भी पूजा करनी चाहिए. भगवान विष्णु के भोग में तुलसी दल को जरूर शामिल करें.

वरुथिनी एकादशी उपाय

1. इस दिन उपवास रखना बहुत उत्तम होता है. अगर उपवास न रख पाएं तो कम से कम अन्न न खाएं. भगवान कृष्ण के मधुसूदन स्वरूप की उपासना करें. उन्हें फल और पंचामृत अर्पित करें. उनके समक्ष 'मधुराष्टक' का पाठ करना सर्वोत्तम होगा. अगले दिन सुबह अन्न का दान करके व्रत का पारायण करें.
2. वरुथिनी एकादशी पर प्रेम, आनंद और मंगल के लिए मधुराष्टक का पाठ करें. कठिन से कठिन समस्या के निवारण के लिए गजेन्द्र मोक्ष का पाठ करें. संतान संबंधी समस्याओं के लिए गोपाल सहस्रनाम का पाठ करें. भक्ति और मुक्ति के लिए विष्णु सहस्रनाम का पाठ करें. पापों के प्रायश्चित्त के लिए भावद्वीता के 11 वें अध्याय का पाठ करें.

वरुथिनी एकादशी व्रत की कथा इस एकादशी व्रत की कथा के अनुसार प्राचीन काल में नर्मदा नदी के तट पर मान्धाता नामक राजा राज्य करता था. वह अत्यंत दानशील तथा तपस्वी था. एक दिन जब वह जंगल में तपस्या कर रहा था, तभी न जाने कहां से एक जंगली भालू आया और राजा का पैर चबाने लगा. राजा पूर्ववत् अपनी तपस्या में लीन रह. कुछ देर बाद पैर चबाते-चबाते भालू राजा को घसीटकर पास के जंगल में ले गया.

राजा बहुत घबराया, मगर तापस धर्म अनुकूल उसने क्रोध और हिंसा न करके भगवान विष्णु से प्रार्थना की, करुण भाव से भगवान विष्णु को पुकारा. उसकी पुकार सुनकर भगवान श्रीहरि विष्णु प्रकट हुए और उन्होंने चक्र से भालू को मार डाला. राजा का पैर भालू पहले ही खा चुका था. इससे राजा बहुत ही शोकाकुल हुआ. उसे दुखी देखकर भगवान विष्णु बोले- 'हे वत्स! शोक मत करो. तुम मधुरा जाओ और वरुथिनी एकादशी का व्रत रखकर मेरी वराह अवतार मूर्ति की पूजा करो. उसके प्रभाव से पुनः सुदृढ़ अंगों वाले हो जाओगे.

इस भालू ने तुम्हें जो काटा है, वह तुम्हारे पूर्व जन्म का अपराध था. भगवान की आज्ञा मानकर राजा मान्धाता ने मधुरा जाकर श्रद्धापूर्वक वरुथिनी एकादशी का व्रत किया. इसके प्रभाव से राजा शीघ्र ही पुनः सुंदर और

संपूर्ण अंगों वाला हो गया. अतः जो भी व्यक्ति भय से पीड़ित है उसे वरुथिनी एकादशी का व्रत रखकर भगवान विष्णु का स्मरण करना चाहिए. इसी एकादशी के प्रभाव से राजा मान्धाता स्वर्ग गया था. इस व्रत को करने से समस्त पापों का नाश होकर मोक्ष मिलता है. इस एकादशी के प्रभाव से राजा मान्धाता स्वर्ग मिला था.

मान्धाता है कि जो मनुष्य विधिपूर्वक इस एकादशी व्रत को करते हैं उनको स्वर्गलोक की प्राप्ति होती है. इसका फल गंगा स्नान के फल से भी अधिक है. इस व्रत के महात्म्य को पढ़ने से एक हजार गोदान का फल मिलता है. अतः मनुष्यों को धर्म कर्म करते हुए जीवन व्यतीत करना चाहिए और पाप कर्मों से दूर रहना चाहिए तथा पापों को करने से डरना चाहिए.

आजमाएं गुड़हल के फूल के ये सरल उपाय

सनातन धर्म में गुड़हल के फूल को बहुत शुभ माना जाता है. मान्यता है कि इससे घर में सकारात्मकता आती है. वास्तु शास्त्र में गुड़हल के फूल के कुछ उपाय बताए गए हैं जिससे जीवन की कई बड़ी समस्याएं का हल हो सकता है. आप इन उपायों को आजमाकर धन या आर्थिक समस्याओं से छुटकारा पा सकते हैं. आइए जानते हैं इन उपायों के बारे में.

आर्थिक तंगी के लिए
अगर आप कड़ी मेहनत कर रहे हैं, लेकिन फिर भी धन आपके पास टिकता नहीं है, इसके अलावा समग्र-समग्र पर आर्थिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है तो ये उपाय आजमा सकते हैं. आप तांबे के कलश में

पूर्व या उत्तर दिशा में लगाना शुभ होता है. इससे सुख-शांति बने रहने के साथ और नकारात्मकता दूर भाग जाती है. ध्यान रखें कि कभी भी गुड़हल का पौधा सूखे नहीं, अच्छे से देखभाल करना बहुत जरूरी होता है.

कार्यक्षेत्र में सफलता के लिए
नीकरी-व्यापार में तरक्की और फायदा पाने के लिए आप गुड़हल के फूल का ये उपाय आजमा सकते हैं. इसके लिए आप गुड़हल के फूल के साथ मिश्री का भोग धन की देवी यानी मां लक्ष्मी को लगाएं. इससे मां लक्ष्मी की कृपा हमेशा आप पर बनी रहेगी और तरक्की का द्वार खुल जाएगा.

दांपत्य जीवन की समस्याओं



जल भरकर और उसमें गुड़हल का फूल रखकर सूर्यदेव को अर्पित करें. मान्यता है कि इससे आर्थिक समस्याओं का हल होता है.

सुख-शांति के लिए
अधिकतर घरों में गुड़हल का पौधा देखने को मिलता है. वास्तु शास्त्र के अनुसार गुड़हल के पौधे को सही दिशा में लगाना बहुत जरूरी होता है. वास्तु के अनुसार गुड़हल का पौधा हमेशा

के लिए पति-पत्नी में वाद-विवाद होना आम बात है, लेकिन अगर ये रोज से रह से तो चिंता का विषय है. अगर आपके और आपके जीवनसाथी के बीच अक्सर लड़ाई-झगड़े होते रहते हैं तो ये उपाय आजमा सकते हैं. इसके लिए आप तक्रिये के नीचे गुड़हल का फूल रखकर सोना शुरू कर दें. आपको कुछ दिनों में फायदा दिखने लगेगा.

सपने में दिखते हैं अनजान चेहरे? किस बात का है संकेत



स्वप्नशास्त्र में हर सपने का कुछ-न-कुछ अर्थ बताया गया है. आखें खुलने के बाद भले ही सपनों का अस्तित्व खत्म हो जाता है लेकिन ये सपने कई तरह के संकेत हमें जरूर देते हैं. ऐसे में आज हम आपको बताएंगे कि अगर आप सपने में कभी किसी अनजान चेहरे को देखते हैं तो असल जीवन में इसका क्या अर्थ लगाया जाता है, ये सपना किस बात का संकेत होता है।

अनजान जगह पर अजनबी को देखना
अगर आप सपने में किसी अनजान जगह पर किसी अनजान शख्स को देखते हैं, तो ये सपना शुभ माना जाता है। इस सपने का अर्थ होता है कि आप जल्द ही किसी विदेश यात्रा पर जा सकते हैं। साथ ही यह सपना आपकी किसी रूढ़िवादि के पूरे होने का संकेत भी माना जाता है। सपने में अनजान लोगों से बातें करना

स्वप्नशास्त्र की मानें तो, अगर आप अनजान लोगों से सपने में बातें कर रहे हैं तो असल जीवन में आप अलग-थलग हो सकते हैं। यानि आपका सामाजिक दायरा सीमित हो सकता है और आपके दोस्त भी बहुत कम होंगे। ये सपना इस ओर भी इशारा करता है कि अपनी बातों को व्यक्त कर पाने में आपको परेशानियां हो रही हैं। इसलिए ऐसा सपना आने के बाद आपको अपनी कम्यूनिकेशन स्किल्स को सुधारना चाहिए। सपने में अनजान व्यक्ति से उपहार पाना

अगर आप देखते हैं कि कोई अनजान शख्स सपने में आपको उपहार दे रहा है तो खुश हो जाइए, यह सपना दर्शाता है कि आपको अचानक से धन

लाभ हो सकता है या कोई बड़ी खुशखबरी मिल सकती है। सपने में कोई अपरिचित करे पीछा अगर आप सपने में देखते हैं कि कोई अपरिचित व्यक्ति आपका पीछा कर रहा है तो ये सपना आपके डर को दर्शाता है। यानि आप किसी बात को लेकर परेशान हैं, कोई मामला है जिसको आप सुलझा नहीं पा रहे हैं। इसलिए ऐसा सपना आने के बाद आपको जीवन के हर पहलू पर नजर दौड़ानी चाहिए और समस्याओं को सुलझाने की कोशिश करनी चाहिए। अनजान व्यक्ति का घर में आना

अगर सपने में आप देखते हैं कि कोई अनजान व्यक्ति आपके घर में दस्तक दे रहा है तो ये सपना जीवन में आने वाले परिवर्तन का संकेत माना जाता है। इस सपने का अर्थ होता है कि जो आपकी वर्तमान स्थिति है वो बदल सकती है, ये बदलाव सकारात्मक भी हो सकते हैं और नकारात्मक भी।

सपने में मृत व्यक्ति को देखना
अगर आप सपने में किस अनजान शख्स को मृत अवस्था में देखते हैं तो समझ जाइए स्वास्थ्य से जुड़ी कोई समस्या आपको हो सकती है। इस सपने के आने के बाद सेहत को लेकर बहुत सतर्कता आपको बरतनी चाहिए।

सपने में बार-बार अनजान लोगों को देखने का मतलब
अगर आप सपने में अनजान चेहरों को बार-बार देखते हैं तो इसका अर्थ लगाया जाता है कि कोई अनोखा अनुभव आपको हो सकता है। किसी ऐसी परिस्थिति में आप पड़ सकते हैं जिसका आपने जीवन में कभी सामना नहीं किया है।

घर में छिपकली का आना देता है अहम संकेत



घर में छिपकली का दिखना सामान्य बात है. लेकिन छिपकली से मिलने वाले संकेत सामान्य नहीं होते हैं. छिपकली का घर में आना, कुछ खास जगहों पर दिखना या छिपकली का गिरना विशेष संकेत देता है. ज्योतिष शास्त्र, वास्तु शास्त्र और शक्य शास्त्र में छिपकली से मिलने वाले संकेतों के बारे में बताया गया है. आइए जानते हैं

घर में छिपकली दिखने से मिलने वाले शुभ-अशुभ संकेत.
घर में काली छिपकली दिखाई देना :
घर में यदि काली छिपकली का दिखना अच्छा नहीं माना जाता है. विशेष तौर पर घर के मंदिर के पास काली छिपकली का दिखना अशुभ संकेत है. यह धन हानि होने या कोई समस्या आने का इशारा है. दरअसल, छिपकली को लक्ष्मी

का प्रतीक माना गया है लेकिन काली छिपकली को अलक्ष्मी माना गया है. इसलिए काली छिपकली का पूजा घर के पास दिखना बुरा माना गया है.
घर में दो छिपकली एक साथ दिखना:
एक साथ दो छिपकली का दिखना सामान्य है लेकिन यदि दो छिपकली आपस में लड़ती हुई दिखें तो यह अशुभ संकेत माना गया है. छिपकली का लड़ना घर में बीमारी की दस्तक होने का संकेत है. यानी कि घर का कोई सदस्य बीमार हो सकता है.
पूजा घर या मंदिर में छिपकली का दिखाई देना: घर में पूजा स्थल पर छिपकली का दिखाई देना शुभ संकेत माना गया है. यह घर में समृद्धि बढ़ने का

संकेत है. यह बताता है कि आपको निकट भविष्य में बड़ा धन लाभ हो सकता है. यदि शुक्रवार के दिन पूजा घर या मंदिर के पास छिपकली दिखे तो यह मां लक्ष्मी की कृपा आप पर होने का साफ संकेत है.
छिपकली का गिरना : छिपकली का बार-बार जमीन पर गिरना अच्छा नहीं माना जाता है. साथ ही महिला या पुरुष के शरीर पर छिपकली का गिरना भी कई तरह के शुभ-अशुभ संकेत देता है. हालांकि छिपकली का जमीन पर रेंगना भी अच्छा होता है, लेकिन ध्यान रहे कि छिपकली को सताएं नहीं. छिपकली को मारने की गलती तो बिल्कुल ना करें.

केदारनाथ धाम के साथ इन पवित्र जगहों के भी करें दर्शन



भगवान शिव के 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक केदारनाथ धाम के कपाट श्रद्धालुओं के लिए 10 मई 2024 से खोले जाएंगे. केदारनाथ उत्तराखंड के रुद्रप्रयाग जिले में भगवान शिव का एक पवित्र धाम है, जहां हर साल लाखों की संख्या में लोग दर्शन के लिए आते हैं. यदि आप केदारनाथ धाम के दर्शन करने वाले हैं तो

इसके नजदीकी पवित्र धामों पर जाना बिल्कुल न भूलें.

देवप्रयाग



बद्रीनाथ



ऋषिकेश



हरिद्वार



उत्तराखंड के पांच प्रयागों में से एक देवप्रयाग की भी एक खास पहचान है. देवप्रयाग वहीं स्थान है जहां गंगोत्री से आने वाली भागीरथी नदी और बदरीनाथ धाम से आने वाली अलकनंदा नदी का संगम होता है. देवप्रयाग से यह नदी पवित्र गंगा के नाम से जानी जाती है. हिंदू धर्म में गंगा नदी को बहुत ही पूजनीय माना गया है. देवप्रयाग में श्री रघुनाथ जी का मंदिर भी है, जहां हिंदू तीर्थयात्री भारत के कोने कोने से आते हैं.

केदारनाथ के पास बद्रीनाथ धाम भी पड़ता है. केदारनाथ से बद्रीनाथ के बीच की दूरी करीब 40 किलोमीटर है. भगवान शिव के परम भक्तों को जीवन में एक बार बद्रीनाथ जरूर आना चाहिए. इस चोटी को भगवान शिव का पर्वत कहा जाता है. बद्रीनाथ मंदिर यहां आकर्षण का सबसे प्रमुख केंद्र है जहां भगवान विष्णु की पूजा की जाती है. इसके अलावा आप यहां, बर्फ की चादर से चोटियां, तप्त कुंड, नीलकंठ की चोटी और द वैली ऑफ पलॉवर जैसी जगहें भी घूम सकते हैं.

दिल्ली-एनसीआर से केदारनाथ जाने वाले लोग ऋषिकेश भी जा सकते हैं. हर साल यहां हजारों लोग गंगा नदी में आस्था की डुबकी लगाने आते हैं. ऋषिकेश से केदारनाथ की दूरी सिर्फ 105 किलोमीटर है. अगर आप केदारनाथ जा रहे हैं तो साथ-साथ ऋषिकेश भी घूमा जा सकता है. ऋषिकेश में लक्ष्मण झूला, त्रिवेणी घाट, स्वर्ग आश्रम, नीलकंठ महादेव मंदिर समेत कई धार्मिक स्थल हैं.

हरिद्वार का नाम भारत के सबसे धार्मिक शहरों में गिना जाता है. दुर्गा पूजा के समय यहां का नजारा बड़ा दिव्या होता है. कुम्भ मेले के समय हरिद्वार की खूबसूरती कई गुना ज्यादा बढ़ जाती है. यहां हर की पौड़ी, चंडी देवी मंदिर, पवन धाम और विष्णु घाट यहां आकर्षण के सबसे बड़े केंद्र हैं. हरिद्वार से केदारनाथ केवल 123 किलोमीटर दूर है. केदारनाथ जाते हुए आप हरिद्वार भी घूमकर आ सकते हैं.

भगवान शिव के परम भक्तों को जीवन में एक बार बद्रीनाथ जरूर जाना चाहिए

सड़क किनारे बैठे बारातियों को तेज रफ्तार ट्रक ने कुचला, दो बच्चियों समेत 4 की मौत

राजनांदगांव (दावा)। मंगलवार 30 अप्रैल को खैरागढ़ रोड स्थित ग्राम तिलई में अपराह्न 4 बजे एक भयंकर हादसा हो गया जिसमें दो बच्चियों समेत चार लोगों की मौत हो गई। बताया जाता है कि ग्राम तिलई के ही रहने वाले सिन्हा परिवार के यहां शादी में आए हुए लोग खैरागढ़ बारात जाने के लिए सड़क किनारे मंदिर के समीप बैठे हुए थे और बस का इंतजार कर रहे थे। इसी दौरान सीमेंट भरकर राजनांदगांव की ओर से आ रही तेज रफ्तार वाहन ने उन्हें अपनी चपेट में ले लिया। इससे मौके पर ही दो बच्चियों समेत चार लोगों की दर्दनाक मौत हो गई। सड़क पर पड़े इन कुचल हुए शवों को देखकर लोगों की आत्मा चिन्ना उठी और लोग दहल उठे। उक्त दर्दनाक गंभीर हादसा होते ही लोगों की वहां भीड़ लग गई और बड़ी संख्या में एकत्रित ग्रामीणों ने यातायात व्यवस्था के खिलाफ आक्रोश दिखाया और गुस्सा एह

गंभीर हादसे को लेकर ग्रामीणों ने की चक्काजाम, आवागमन बना रहा अवरुद्ध



मृतकों के लिए मुआवजे की मांग

ग्रामीणों ने मृतकों के परिवार को मुआवजा दिलाने चक्काजाम कर दिया जिससे तिलई में देर तक आवागमन अवरुद्ध बना रहा। गनीमत है कि सूचना मिलते ही शहर से कोतवाली पुलिस की टीम थाना प्रभारी एमन साहू के नेतृत्व में वहां नरेश कुमार

(वर्ष), गनेशिया पति पूनाराम सिन्हा (60वर्ष) व उनकी 14 वर्षीय पुत्री यशोदा व पल्लवी है। ये सभी चंद्रपुर महाराष्ट्र के रहने वाले बताए जाते हैं। चिखली चौकी प्रभारी नरेश कुमार बंजारे ने बताया कि दो बच्चियों समेत चार लोगों को एक्सिडेंट का शिकार कर आरोपी सीमेंट वाहन चालकों फरार हो गया। इस दौरान पुलिस टीम आक्रोशित भीड़ को शांत व व्यवस्थित करते व यातायात व्यवस्था को सुचारू करते रह गईं। इससे मौके में भीड़ की वजह है आरोपी वाहन चालक पकड़े नहीं जा सका है। पुलिस इसकी तलाश में जुट गई है। तिलई में हुई इस दर्दनाक हादसे के चलते मौत हुए लोगों के शवों की पोस्टमार्टम हेतु भिजवा दिया गया है वहीं घटना को लेकर विवेचना कार्य प्रारंभ कर दिया गया है।

भाजपा कार्यालय के समीप जीई रोड में चार वाहनों की हुई टक्कर, हादसे में बाइक सवार की मौत, दो जख्मी

राजनांदगांव (दावा)। मंगलवार की शाम तकरीबन 5 बजे जी ई रोड स्थित भाजपा कार्यालय के समीप चार वाहनों की आपस में टक्कर हो गई जिससे बाईक सवार की मौत होने तथा दो लोगों के बुरी तरह जखमी होने के समाचार है जिन्हें उपचार हेतु मेडिकल कालेज हास्पीटल-पेंड्री ले जाया गया है। बताया जाता है कि इस घटना से गंभीर रूप से जखमी एक युवक आदित्य को रायपुर रेफर कर दिया गया वहीं दूसरे जखमी युवक मुकुंद को भर्ती कर इलाज किया जा रहा है। कोतवाली पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार उक्त घटना के संबंध में कोई भी रिपोर्ट दर्ज कराने नहीं आया। इससे पुलिस वाले भी इस संबंध में ज्यादा जानकारी नहीं दे पाए। हालांकि मौके पर पहुंची पेट्रोलिंग पुलिस घटनास्थल पर व्यवस्था बनाने में जुटी रही व एक मोटर सायकल



को डक्रेल एक किनारे करते नजर आई। संभवतः उक्त मोटर सायकल सवार की इस हादसे में मौत हो गई है। कोतवाली थाने के भूनेश्वर जायसी ने बताया कि मंगलवार की शाम हुई इस घटना में एक पिकअप वाहन व एक बोलेरो सहित माजदा वाहन की आपस में टक्कर हुई है। इससे बोलेरो वाहन का अगला हिस्सा बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया है। समाचार लिखे जाने तक उक्त घटना के संबंध में किसी प्रकार रिपोर्ट दर्ज नहीं कराई गई है।

महादेव एप मामले में नई चार्जशीट दाखिल, ED के शिकायत पत्र में 25 आरोपियों और संगठनों का जिक्र



रायपुर। पर्वतन निदेशालय ने मंगलवार को महादेव सट्टेबाजी एप से जुड़े मनी लॉकिंग मामले में एक नया आरोप पत्र दाखल किया है। इसमें कुल 25 लोगों के खिलाफ मामला दर्ज किया है। इसमें छत्तीसगढ़ के कई उच्च पदस्थ राजनेताओं और नौकरशाहों के शामिल होने का आरोप है।

इंडी के वकील सौरभ पांडे ने कहा कि इस मामले में विशेष धन शोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए) अदालत के समक्ष दाखल तीसरी अभियोजन शिकायत में कुल 25 व्यक्तियों और संस्थाओं को आरोपी के रूप में नामित किया गया है। उन्होंने कहा कि अदालत 4 मई को आरोप पत्र पर कार्रवाई करेगी। आरोप पत्र में जिन लोगों पर आरोप लगाए गए हैं उनमें कुछ अन्य लोगों के अलावा गिरिशा तलरजा और सूरज चोखानी भी शामिल हैं, जिन्हें कुछ समय पहले इस मामले में इंडी ने गिरफ्तार किया था। तलरजा का पास महादेव ऑनलाइन बुक (एमओबी) एप की सहयोगी कंपनी 'लोटस365' में हिस्सेदारी थी। एजेंसी ने पहले आरोप लगाया था कि वह 'लोटस365' के अवैध संचालन में रतन लाल जैन उर्फ एमएन और एमओबी के मुख्य प्रमोटर सौरभ चंद्राकर के साथ भागीदार हैं। एजेंसी ने 28 फरवरी को हरि शंकर टिब्रेवाल नाम के दुबई स्थित 'हवाल्ला ऑपरटर्स' के कोलकाता परिसर पर छापा मारा था, जिसमें दावा किया गया था कि उसने सट्टेबाजी वेबसाइट 'स्काई एक्सचेंज' के अवैध संचालन में एमओबी के प्रमोटरों के साथ भागीदारी की थी। एजेंसी ने एक बयान में कहा था, टिब्रेवाल ने भारतीय कंपनियों के लिए शेयर निवेश की आड़ में अपराध की आय को वैध बनाने और छिपाने के लिए सूरज चोखानी का इस्तेमाल किया। इंडी ने आरोप लगाया है कि एमओबी गैमिंग और सट्टेबाजी एप में उसकी जांच में छत्तीसगढ़ के विभिन्न उच्च-रैंकिंग राजनेताओं और नौकरशाहों की सलिमता दिखाई गई है, वह राज्य जहां एप के दो मुख्य प्रमोटर, सौरभ चंद्राकर और रवि उप्पल हैं। इसमें कहा गया था कि एमओबी एप एक व्यापक सिस्टिकेट है जो अवैध सट्टेबाजी वेबसाइटों को नए उपयोगकर्ताओं को नामांकित करने, उपयोगकर्ता आईडी बनाने और बेनामी बैंक खातों के एक स्तरित वेब के माध्यम से धन की हेराफेरी करने में सक्षम बनाने के लिए ऑनलाइन प्लेटफॉर्म की व्यवस्था करता है। इंडी ने इस मामले में अब तक कुल 11 लोगों को गिरफ्तार किया है। बताया जाता है कि एप के दो मुख्य प्रमोटरों को इंडी द्वारा अनुरोधित इंटरपोल रेड नोटिस के आधार पर दुबई में हिरासत में लिया गया था।

सट्टेबाजी में कांग्रेस नेता समेत तीन गिरफ्तार, लंबे समय से सट्टा खिलाने का कर रहे थे काम

रायपुर। राजधानी रायपुर के टिकरापारा थाना पुलिस ने कांग्रेसी नेता भूपत महोदय सहित तीन सदस्यों को गिरफ्तार किया है। आरोपित अन्ना रेड्डी आनलाइन बेटिंग एप से सट्टा चला रहे थे। भूपत काफी लंबे समय से सट्टे खिलाने और खेलने का काम कर रहा था। तीनों आरोपितों के पास से तीन मोबाइल फोन सहित लेनेदेने के हिसाब जम्मा किए गए हैं। पुलिस ने भूपत के साथ शुभम केवलानी और अभिषेक गुप्ता को गिरफ्तार कर जुआ एक्ट के तहत कार्रवाई की है। रायपुर पुलिस द्वारा लगातार आनलाइन सट्टा पर कार्रवाई की जा रही है। इसी क्रम में गिरफ्तार को टिकरापारा पुलिस को सूचना प्राप्त हुई कि क्षेत्रांतर्गत सिमरन सिटी, तरुण बाजार और सुतोषी नगर के पास कुछ लोग क्रिकेट मैच पर आनलाइन सट्टा खेल रहे हैं।

पुलिस ने दबिश देकर तीनों आरोपितों को पकड़ा

इसके बाद थाना टिकरापारा एवं एंटी फ्रॉड और साइबर यूनिट की विशेष टीम ने वहां दबिश देकर आरोपितों को पकड़ लिया। सिमरन सिटी से पकड़े हुए संदीप चोपड़ा ने अपना नाम भूपत महोदय निवासी शहीद भगत सिंह चौक टिकरापारा रायपुर बताया। उसके पास रखे मोबाइल को चेक करने पर आनलाइन क्रिकेट पर सट्टा मिला। इसी तरह तरुण बाजार से पकड़ा गया शुभम केवलानी निवासी साई सिमरन सिटी मठपुरीना और अभिषेक गुप्ता निवासी शिव नगर मठपुरीना टिकरापारा के मोबाइल पर भी आनलाइन सट्टा मिला।

संचालक मंडल भी अवैध करार, उन पर लगाए गए आरोप बेबुनियाद - नवाज खान

उठाया जाएगा विधानसभा में मामला, कराई जाएगी सबकी जांच

राजनांदगांव (दावा)। जिला सहकारी केंद्रीय बैंक के पूर्व प्रशासक नवाज खान ने एक प्रेस वार्ता लेकर अपने उपर लगाए गए आरोपों को पूरी तरह निराधार बताते हुए कहा कि उस पर लगे समस्त आरोपों को विधानसभा में उठाऊंगा और आरोपकर्ताओं के ऊपर जांच की मांग करूंगा। नवाज खान ने जिला सहकारी बैंक में कलेक्टर द्वारा सचिन बघेल को बौर रजिस्ट्रार की अनुशंसा वह अनुमति के बिना देने पर भी आपत्ति व्यक्त की और इसे अवैधानिक बताया। बता दें कि गत दिनों बौर प्रशासक के रूप में पदभार ग्रहण करने के बाद सचिन बघेल ने जिला सहकारी केंद्रीय बैंक के पूर्व अध्यक्ष पर गंभीर आरोप लगाए थे जिसके जवाब नवाज खान ने प्रेस वार्ता कर बताया कि जिला सहकारी बैंक राजनांदगांव में 51 दैनिक वेतन भोगी कर्मचारियों की नियुक्ति संचालक मण्डल के द्वारा बैंक की मांग पर किया गया तथा उपरोक्त नियुक्ति 89 दिन के लिए बैंक के सुचारू संचालन सुरक्षा व्यवस्था हेतु भूय पद पर किया गया था। वर्ष 2020-21 तथा 2022-23 में जिसे अवैध नियुक्ति कहकर निकाल दिया गया जबकि इसका ठीक विपरीत पूर्व भर्ती



सरकार में 2011 से 2019 तक के कार्यकाल में इन्होंने लोगों के द्वारा 26 लोगों की नियम विपरीत नियुक्ति की गई। जिसकी सूची उन्होंने पत्रकारों को भी उपलब्ध कराई है। **आवेदन मंगा कर की गई भर्ती** नवाज ने आगे कहा कि उनकी प्रशासकीय कार्यकाल में अधिकारियों द्वारा कहे जाने पर कि बैंक में भूय व चौकीदार के पद रिक्त हैं। इस दौरान कर्मांधी क्षेत्र में भी चार बैंक खोले गए। इन स्थानों में पुरानी नोडशीट के द्वारा आवेदन मंगाने भर्ती किया गया जो कि पहले से किया जाता रहा नहीं है। उन्होंने बताया कि उनके कार्यकाल में मेट्टा, तरेवांग, रेगाखार एवं रेवेली जिल्लम में सतृती भूय की तत्काल आवश्यकता थी। उन पर आरोप लगाया गया 2020-21, 2022-2023 में लगे दैनिक वेतनभोगी कर्मचारियों लगभग एक करोड़ रूप्यक हुआ तो 2011 से 2019 तक लगे कर्मचारियों पर कितना व्यय हुआ नवाज ने उसकी भी जांच की मांग की है। नवाज ने कहा कि अध्यक्ष बनते ही भूय चौकीदार का रिक्त पद होने की जानकारी मिलने पर बैंक में दैनिक वेतनभोगी कर्मचारी रखे गए। पूर्व में 2011 से 2019 तक संचालक मण्डल तथा सीईओ सीधे भर्ती कर देते थे उसी प्रक्रिया का पालन किया गया तोरई नई प्रक्रिया अपनाई नहीं गई। अतः 51 की नियुक्ति कैसे गलत है उन्हें काम से निकाला गया तो 2011 से 2019 तक गलत तरीके से काम पर लगाये गये दैनिक

मार्कफेड में कार्यरत विष्णु राम साहू को दिया गया विदाई



राजनांदगांव (दावा)। मार्कफेड के किसान राइस मिल गर्ड्स में हेल्पर के पद पर कार्यरत विष्णु राम साहू को मार्कफेड में सेवा अवधि समाप्त होने पर 30 अप्रैल को जिला विपणन कार्यालय खैरागढ़ में जिला विपणन अधिकारी चंद्रपाल दीवान, लेखपाल आलोक टोपो, वरिष्ठ क्षेत्र सहायक अनिल मिश्रा, क्षेत्र सहायक बिजेन्द्र राज, कार्यालय कर्मचारी घनश्याम साहू, दशरथ शर्मा, नोहर वर्मा, महेंद्र डबोरे, सरोज बाई, विश्राम सिंह ठकुर, रेवा राम पटेल, बेनी राम साहू की उपस्थिति में सर्वप्रथम जिला विपणन अधिकारी चंद्रपाल दीवान के द्वारा उनके कुशल नेतृत्व एवं कार्यशैली की सराहना करते हुए तिलक लगाकर एवं श्रीफल साल भेंट करते हुए उनके आगे के लिए स्वास्थ्य जीवन की कामना करते हुए बधाई दी है, वहीं सर्वप्रथम विष्णु राम साहू का गर्ड्स खैरागढ़ के कर्मचारियों द्वारा तिलक लगाकर जिला कार्यालय खैरागढ़ के लिए प्रस्थान किन्ने क्या उपस्थित अधिकारी एवं कर्मचारियों ने पुष्प कुच्छ भेंट कर उन्हें आगे के जीवन के लिए बधाई दी है।

अवैध तरीके से हुई सचिन बघेल की नियुक्ति

नवाज खान ने जिला सहकारी बैंक में सचिन बघेल की नियुक्ति को अवैध तरीके से हुई बताते हुए कांग्रेसी नेता रमेश खंडेलवाल, गोवर्धन देशमुख, अंगेश्वर देशमुख, भावेश सिंह, नरेन्द्र वर्मा, अजय मार्कडे, संदीप सिंह गहरवार आदि की उपस्थिति में कहा कि पूर्व में जब सचिन बघेल अध्यक्ष थे उनके कार्यकाल में हुई अनियमितता के कारण उनके संचालक मण्डल को राज्य सरकार ने निलंबित कर दिया था दिनांक 20/05/2021 को इसके विरुद्ध 78 (1) (ग) छग. सह.सो.अधि. 1960 के अंतर्गत अपील प्रस्तुत किया गया था। परंतु सचिन बघेल का कार्यकाल निलंबन अवधि के पश्चात मात्र 14 महीने बचा था जिस पर न्यायालय छत्तीसगढ़ राज्य सह. अधिकरण बिलासपुर (छ.ग.) ने 12/03/2024 को एक आदेश पारित किया, जो की कार्यकाल समाप्ति के लगभग 3 वर्ष पश्चात जिसमें कही भी यह नहीं लिखा है कि आपका संचालक मण्डल पुनः स्थापित किया जाता है बल्कि उसमें क्रं.

22 पर उल्लेखित है कि आप अपनी बात सक्षम अधिकारी के पास प्रस्तुत करें। सक्षम अधिकारी का अभिप्राय पंजीयक इस पर पंजीयक को विचार कर आदेश देना था पर किसी भी प्रकार के बिना पंजीयक के आदेश के सीधे प्रभार ले लिया गया जो पूरी तरह से अवैध है। नवाज ने कहा कि इस संचालक मण्डल को 1 महीने के भीतर जिला सहकारी बैंक में बैठने का अधिकार नहीं है। उन्होंने कहा कि किसी भी निर्वाचित जनप्रतिनिधि का निर्वाचन का एक समय अवधि होता है, उपरोक्त 5 वर्ष की समयावधि के साथ किसी भी निर्णय का कोई प्रभाव नहीं रहता, जिसकी यहां तो निर्णय में स्पष्ट रूप से सक्षम अधिकारी के पास जाने कहा गया है। किन्तु बैंक में चार्ज लेने की जल्दी, पद लोचलुपता की जल्दी व कुर्सी में बैठने की जल्दी के चक्र में बिना पंजीयक के पास गए चार्ज ले लिया गया। उन्होंने कहा कि किन परिस्थितियों में कलेक्टर ने उन्हें प्रभार सौंपा यह भी जांच का विषय है। को किनका संरक्षण प्राप्त है इसमें लगभग तीन करोड़ का घोटाला है जिसकी भी वसूली की बात कही।

निगम के गोपनीय और आवश्यक दस्तावेजों का प्रभार दैनिक वेतन भोगी श्रमिक को देकर आयुक्त ने गलत किया-कुलबीर

वरिष्ठ पार्षद कुलबीर ने आयुक्त को पत्र लिखकर आदेश रद्द करने व नियमित कर्मचारियों को निगम में रखने की मांग की

राजनांदगांव (दावा)। नगर निगम के चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारियों को कार्यालय से हटाकर मजदूरी कार्य के लिए रखे ठेकेदार मजदूरों को निगम के जरूरी दस्तावेज, नस्त्रियां सहित जिम्मेदारी व गोपनीय फाइलों को उनके हाथ से एक टेबल से दूसरे टेबल देने की जिम्मेदारी सुरक्षित नजर नहीं आ रही है वहीं अनियमित मस्टररोल में रखे कर्मचारियों के नाम से आदेश जारी कर स्थापना शाखा का प्रभार उचित नहीं लग रहा है जिसको लेकर वरिष्ठ पार्षद कुलबीर सिंह खबड़ा ने निगम आयुक्त को पत्र लिखकर निगम की दस्तावेज फाइलों को बचाने व सुरक्षित रखने की मांग की है। वरिष्ठ पार्षद कुलबीर सिंह खबड़ा ने निगम आयुक्त को पत्र लिखकर कहा कि आपके द्वारा अनियमित कर्मचारी को निगम के स्थापना विभाग का प्रभार दिए

जाने का नियमानुसार प्रावधान की स्थिति स्पष्ट करने की मांग की है। श्री खबड़ा ने कहा कि यह आक्षेप का विषय है कि स्थापना शाखा जहां निगम के कर्मचारियों की सर्विस बुक तथा गोपनीय दस्तावेज जो कि सूचना के अधिकार के तहत भी प्रदान नहीं किए जाते तथा इन सब दस्तावेजों के गुम होने अथवा नष्ट होने से निगम के नियमित कर्मचारियों को बहुत बड़ा नुकसान है। निगम आयुक्त द्वारा अनियमित मस्टररोल में रखे कर्मचारियों के नाम से आदेश जारी कर स्थापना शाखा का प्रभार देना न्यायसंगत उचित नहीं है। वहीं नियमित चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों को निगम कार्यालय से हटाकर मजदूरी कार्य के लिए प्रभार देने का आदेश किया गया है एवं ठेकेदारी प्रथा में रखे मजदूरों को निगम कार्यालय में निगम आयुक्त द्वारा आदेश जारी के

निगम आयुक्त द्वारा आदेश जारी कर नियमित कर्मचारियों को हटाकर मजदूरी कराने एवं मस्टररोल में रखे मजदूरों को निगम कार्यालय में प्रभार सौंपना, कहना का न्याय है



नस्त्रियों को एक टेबल से दूसरे टेबल देने से निगम के दस्तावेजों को ठेकेदारी प्रथा से रखे गए मजदूरों के हाथ में आने से दस्तावेजों की जिम्मेदारी सुरक्षित नहीं जबकि ठेकेदारी प्रथा में रखे मजदूरों के हाथ निगम के सरकारी दस्तावेज देने का प्रावधान नहीं है। वरिष्ठ पार्षद श्री खबड़ा ने आयुक्त को लिखे पत्र में कहा कि निगम के दस्तावेज सुरक्षित नहीं है मैं खुद निर्वाचित पार्षद हूँ नगर निगम का एक अंग हूँ मेरा दायित्व है कि किसी भी प्रकार की होने वाली दुर्घटना अथवा निगम में होने वाले अहित से आपको अवगत कराऊँ। निगम आयुक्त द्वारा इस तरह से गलत आदेश जारी कर निगम के कर्मचारियों को प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से प्रताड़ित किये जाने की भावना प्रतीत हो रही है, नगर निगम के हित और जरूरी दस्तावेजों के सुरक्षा को देखते हुए स्थापना विभाग में निगम के नियमित कर्मचारियों को प्रभार देने सहित नियमित कर्मचारियों को निगम कार्यालय में रखने एवं ठेकेदारी प्रथा के मजदूरों को उनके मूल कार्य में रखने की बात कही है।

श्री खबड़ा ने कहा कि यदि इस पत्र देने के बावजूद नियमित कर्मचारियों को स्थापना एवं निगम कार्यालय से बाहर किया गए कर्मचारियों को वापस निगम कार्यालय में नहीं रखा जाता है और ठेकेदारी प्रथा से रखे गए मजदूरों से कार्य कराया जाता है तो निगम में किसी भी प्रकार के दस्तावेज गुम होने, निगम के सामान गायब होने अथवा किसी भी प्रकार की अग्रिम घटना होने की जवाबदारी निगम आयुक्त की होगी। उस स्थिति में निगम की क्षति को संभावना को देखते हुए मैं अपने विधिक अधिकारों के प्रवर्तन के लिए विधिक प्रक्रिया की ओर अग्रसर होऊंगा जिसकी संपूर्ण जिम्मेदारी निगम आयुक्त की होगी। उक्त पत्र की प्रतिलिपि मुख्य कार्यालयन अधिकारी राज्य शहरी विकास अधिकरण नया रायपुर को भी दी है।

लोक शिक्षण संचालनालय के नाम से सोशल मीडिया पर भ्रामक पत्र वायरल

राजनांदगांव (दावा)। लोक शिक्षण संचालनालय उछीसगढ़ के नाम से सोशल मीडिया पर भ्रामक पत्र वायरल हुआ है। वायरल भ्रामक पत्र में उच्चतम न्यायालय के आदेश के परिप्रेक्ष्य में छत्तीसगढ़ के सभी जिला शिक्षा अधिकारियों को संबोधित करते हुए सीधी भर्ती 2019 एवं

2024 में नियुक्त ऐसे सहायक शिक्षक जिनकी व्यावसायिक योग्यता केवल बी.एड है, उन शिक्षकों को छः माह का प्रशिक्षण कराकर उनकी योग्यता डी.एल.एड के समकक्ष करने हेतु निर्देशित किया गया है। लोक शिक्षण संचालनालय द्वारा इस संबंध में कोई पत्र जारी नहीं किया गया है, यह पत्र पूरी तरह से फर्जी है।



दैनिक दावा		
मासिक बिल		
प्रति दिन	दर	राशि
29 दिन	4/-	116/-
	योग	116/-
व्यवस्थापक		